सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता – पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

• वर्ष : 12 • • अंक : 9-10 (संयुक्तांक) • • 5 जनवरी : 2016 • • मूल्य : 20 रु. •

संयम स्वर्ण महोत्सव

प. पू. मारवाड़ ज्योति

श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा.

पंचम पुण्यतिथि
पर हार्दिक

श्रद्धांजली

श्रीमती सवितादेवी
शांतिलालजी मेहता

मुझे तेरी बहुत याद आती है माँ
तेरी याद तुझसे दूर होने का दर्द दे जाती है माँ...
तेरे पास था तो तेरे आँचल में सो जाता था माँ
अब सोने से पहले तेरे खयालों में खो जाता हूँ माँ...
मेरी हर तकलीफ में मुझसे ज्यादा दर्द पाती थी माँ
वो भी क्या दिन थे जब अपने हाथों से खिलाती थी माँ...
जब पास था तो बाहर जाने को ललचाता था माँ
अब हररोज़ तुझसे मिलने को तरस जाता हूँ माँ...
तेरे वात्सल्य की छाँव को नहीं भूल पाता हूँ माँ
वो छाँव बरकरार है, अब इसी से खुद को समझाता हूँ माँ...
तेरी ममता की मूरत को मन में बसाया हुआ है माँ
हमने मन में तेरा मंदिर बनाया हुआ है प्यारी माँ...

जन्म	स्वर्गवास
03.06.1973	06.12.2010

तुम्हारे लाडले : रोहित और रीतिक

सौ. कमला मेहता, सौ. सीमा मेहता, सौ. सूरीला मेहता, सौ. पायल बोकडिया

प.पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की आप सांसारिक बहिन थी।

शा. कालुचंदजी अशोककुमार श्रीश्रीश्रीमाल
फर्म
मणि स्टील इण्डस्ट्रीज
मुम्बई
फोन : 022-67437943

शा. शांतिलालजी मेहता
रोहित कुमार रीतिक कुमार मेहता
फर्म : रोहित एल्युमिनियम एजेन्सी
अहमदाबाद
फोन : 079-27553586

भगवान महावीर

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥

जाने अनजाने में कोई अधर्म कार्य कर बैठे, तो अपनी आत्मा को उस से तुरन्त हटा ले। फिर दूसरी बार वैसा कार्य न करे।

If knowingly or unknowingly an irreligious act is committed, one should immediately withdraw one's self from it and should ensure that such an act is not committed again.

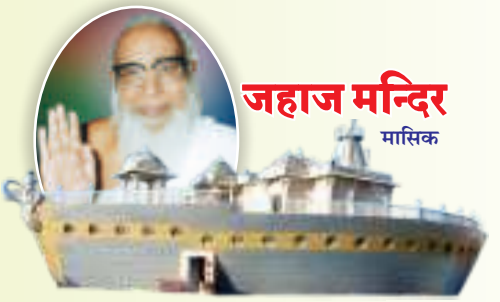

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 9-10 (सयुक्तांक) 5 जनवरी 2016 मूल्य 20 रू.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	09
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
5. असमय में जीवन दीप बुझा	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	15
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	17
7. आनन्द श्रावक	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	21
8.मधुर संस्मरण	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	25
9. मालू परिवार की कलि चंपावाटिका से खिली	साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा.	31
10. मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रीजी की विहार यात्रा		35
9. समाचार दर्शन	संकलन	39-69
10. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-115	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	71
11. जहाज मंदिर पहेली 113 का उत्तर		73
12. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	74

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन धरा पर

श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन

श्रमण सम्मेलन- 1 मार्च से 9 मार्च 2016
श्रावक सम्मेलन- 10 मार्च से 12 मार्च 2016
सभी को पधारने का हार्दिक निवेदन

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	:	15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	:	11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	:	9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	:	7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	:	3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	:	3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	:	1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

दुख और दोष, ये दो शब्द बडे महत्वपूर्ण हैं।

ये दोनों मुझमें भरे पडे हैं, पर दोनों के संबंध में मेरी दृष्टि अलग-अलग है।

मेरे जीवन में दु:ख भी भरे पडे हैं और दोष भी!

प्रश्न है कि मैं किस कारण चिन्तित होता हूँ। दु:ख के कारण या दोष के कारण!

मेरे जीवन में दु:ख है, यह पीडा का कारण है।

पर मेरे भीतर दोष भरे पडे हैं, उसके लिये मुझे कोई चिन्ता नहीं।

दु:ख का अनुभव होते ही मैं उसे दूर करने के लिये परेशान हो उठता हूँ। और ऐसा एक भी मौका नहीं छोडता, जो इन्हें दूर कर दे।

पर क्या मैं अपने भीतर भरे पडे दोषों का अनुभव जब करता हूँ तब उन्हें दूर करने के लिये प्रयत्नशील होता हूँ?

यह समझ महत्वपूर्ण है कि दोनों में कार्य कारण भाव है।

दु:ख कार्य है, कारण नहीं।

दोष कारण है, कार्य नहीं।

यह सच्चाई समझना जरूरी है कि जीवन में जो भी दु:ख है, वह दोषों के कारण है। दोषों का ही परिणाम तो दु:ख है। दोष जब अपना सिर उठाकर हमारे व्यवहार, हमारे चिन्तन और हमारे जीवन का मालिक बन जाते हैं, तो परिणाम दु:ख के रूप में प्राप्त होता है।

दोष अर्थात् कषाय, वासना, ईर्ष्या, निंदा, विकथा, हिंसा, छल, प्रपंच आदि सारे दुर्गुण दोष हैं। व्यक्ति का मन जब दोष-युक्त व्यवहार में आनंद का अनुभव करने लगता है, तभी उसके जीवन में दु:खों का पहाड टूट पडता है।

हमें अपनी दृष्टि बदलनी है। दु:ख के कारण परेशान मत बनो। दोष जो दु:ख का कारण है, उसके कारण मात्र चिन्तित ही न बनो अपितु दु:ख के इस कारण को सदा सदा के लिये अपने दिल से देशनिकाला दो।

गुरूदेव
की कहानियाँ

गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.

मुक्ति के सोपानों पर पहला कदम

राजकुमारी का अपमान महामुनि ने तो सह लिया पर उनसे प्रभावित वह देव कैसे सहन करता?अपनी ही दृष्टि के समक्ष अपने आराध्य देवता का अपमान वह सह नहीं पाया तुरन्त उसने राजकुमारी को सजा दी और उसे पागल बना दिया।

यक्ष पूजा से निवृत्त हो यद्यपि वह राजकुमारी अपनी सखी के साथ राजमहल में लौट आयी पर अपने आपे से बाहर होकर। पल भर में वह रोती तो दूसरे ही पल वह हँसने लग जाती। राजा कौशलिक चकरा गया। उसे दु:ख भी बहुत हुआ। अच्छी भली तो गयी थी। अभी-अभी क्या हो गया?सारा राजपरिवार एकत्रित हो गया। कई वैद्य बुलाये गये परन्तु यह तो दैवी प्रकोप था। अत: कैसे शान्त होता?

अन्त में सम्राट ने उसी यक्ष की आराधना करके उसे प्रसन्न किया। तब वह यक्ष बोला-इसने महामुनि की आशातना की है। यदि यह अपने अहंकार का विसर्जन करके मुनि को पति रूप में स्वीकार करे तो पुन: स्वस्थता पा सकती है अन्यथा नहीं।

स्वीकृति के अलावा चारा ही क्या था?राजा ने यक्ष की शर्त स्वीकार की तब यक्ष ने भी राजकुमारी को स्वस्थ बना दिया। राजकुमारी ने ऋषि हरिकेशी से क्षमा मांगी व स्वयं को स्वीकार करने के लिये निवेदन करने लगी।

हरिकेशी तो निस्पृह, विषय-विकारों से ऊपर उठे हुए थे। वासना का अंग भी उनमें नहीं था। अपनी इन्द्रियों पर पूर्णत: काबू पा लिया था। वे कैसे सुभद्रा को स्वीकार करते?अनुकूल उपसर्ग जान उन्होंने तुरन्त विहार कर दिया।

राजा पशोपेश में पड़ गया। अब क्या करना?ऋषि को समर्पित कन्या किसी क्षत्रिय को नहीं दी जा सकती। उसी समय अनेक पंडित ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया गया और इस समस्या का समाधान पूछा गया।

सभी पंडितों ने एक स्वर से कहा-राजन्! अब यह राजकुमारी किसी ब्राह्मण को ही दी जा सकती है। राजा ने भी और कोई उपाय न देखकर प्रकाण्ड पंडित राज पुरोहित श्री रूद्रदेव के साथ अपनी पुत्री का पाणिग्रहण करवा दिया।

समय बहता रहा। एक बार राजपुरोहित रूद्रदेव ने राजाज्ञा से महायज्ञ का आयोजन किया। सुभद्रा रूद्रदेव के समीप बैठी थी। कितने ही ब्राह्मण दूर सुदूर प्रदेशों से दक्षिणा के लोभ से आकृष्ट होकर यज्ञमंडप में पहुँचे थे। चारों ओर पक्वानों की भीनी खुशबू बिखरी हुई थी। मुनि आहार के लिये उसी यज्ञ मंडप में पहुँचे।

ज्योंहि शांत और धीमी गति से आ रहे मुनि को उन ब्राह्मणों ने देखा। उनका क्रोध सारी सीमाएँ लांघ गया। मलिन गात्र मुनि को देखते ही वे नाक भौं सिकोड़ने लगे। थू थू करते हुए उन्होंने कहा-अरे भिक्षुक! तू यहाँ इस पवित्र यज्ञमंडप में क्यों आया है?तेरे आने मात्र से ही हमारा यह मंडप अपवित्र हो गया है। भाग यहाँ से।

यक्ष जो हरिकेशी का परम भक्त था। तुरन्त उनके शरीर में प्रविष्ट होकर कहने लगा-हे ब्राह्मणो! मैं आबाल ब्रह्मचारी, अपरिग्रही, इन्द्रियों का नियंता भिक्षुक हूँ और इधर आहार की व्यवस्था देखकर आया हूँ।

ब्राह्मणों ने कहा-अरे भिक्षुक! यह भोजन तो पवित्र ब्राह्मणों के लिए हैं, तेरे जैसों के लिए नहीं है। अगर तेरे जैसों

संयम अनुमोदना

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्री म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदूषि शिष्या
प.पू. मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्री जी म.सा. के दीक्षा पर्याय के 50 वर्ष परिपूर्ण एवं
51 वें वर्ष में प्रवेश के संयम जीवन महा महोत्सव के शुभ अवसर पर हमारी भाव भरी
हार्दिक हार्दिक अनुमोदना एवं गुरूवर्या श्री के दीर्घायु की मंगल कामना

जन्म
दिनांक 13.5.1948
फलोदी नगर

दीक्षा
वि.सं. 2075 मिगसर सूदि 10
फलोदी नगर

खरतरगच्छ की वाटिका को जिसने चमकाया
संयम साधना की सौरभ जिनशासन को महकाया
महावीर वाणी की ध्वजा को जिसने चमकाया
ऐसे क्षणों में अन्तर्मन हमारा चहकाया

सिद्धि, आरवी

अनुमोदना कर्ता (अनुमोदक)

श्री मांगीलाल, हीरालाल, दिनेश कुमार, महावीर कुमार,
विक्रम कुमार, हितेष कुमार, प्रिंसकुमार, भावेश कुमार, शुभम कुमार,
कृषि कुमार, यश कुमार, प्रियांस कुमार, आर्यन कुमार,
आदित्य कुमार बेटा पोता स्व. श्री चुन्नीलालजी कंकु चौपड़ा परिवार
मरूधर में समदड़ी हाल विजयपुर (कर्नाटक)

Firm : **Dress Line** - Rammandir Road, Vijaypur (Kar.)
Hi-Fishion - B.L.D.E. Road, Vijaypur (Kar.)

को यह आहार दिया गया तो यज्ञ का फल समाप्त हो जायेगा।

फिर भी मुनि वहीं खड़े रहे और बोले-किसान भी समस्त खेत में अनाज बोकर फसल प्राप्त कर लेता है तो तुम यह कैसे कह सकते हो कि ब्राह्मण के अलावा अन्य को दिया गया दान फलता नहीं है। ब्राह्मण मात्र ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से ही नहीं हो जाता। उसके कर्म भी ब्राह्मण योग्य होने चाहिए। ब्रह्म में ही जिसका चिन्तन रहता है वही ब्राह्मण माना जाता है। कषायों से युक्त ब्राह्मण, ब्राह्मण होने पर भी चांडाल ही माना जायेगा।

उन ब्राह्मणों की क्रोधाग्नि भड़क उठी। उन्होंने क्रोधित होते हुए कहा- हमें यह तेरा थोथा तत्वज्ञान नहीं चाहिए। अगर यह भोजन बच भी गया तो हम कुत्तो को खिला देंगे पर तुझे तो हरगिज नहीं देंगे।

यक्ष फिर भी शांत रहा और शान्ति से ही बोला-किसी शांत तपस्वी को इस प्रकार अपमानित करने से यज्ञ का सुपरिणाम प्राप्त नहीं होता। यज्ञ का अर्थ यही होता है कि उसमें कषायों को जलाकर भस्म करें।

ब्राह्मण यह हित कब सहन करते?उन्होंने जब देखा कि ये बातों से हटने वाले नहीं हैं तब उन पर जमकर लातों की बौछार करने लगे! कितने ही ब्राह्मण इसके दर्शक बन गये।

भयंकर कोलाहाल मच गया। यह कोलाहाल सुनकर सुभद्रा भी वहां पहुँच गयी। उसने ज्योंहि मुनि को देखा अरे...! पहचानते भी हो यह कौन मुनि है?यह तो वही निस्पृह संत हैं, जिन्होंने मेरा त्याग कर अपने आपको विषय वासना से दूर रखा था। जिन्होंने मेरी समस्त प्रार्थनाओं को, मेरे समर्पण को ठुकराकर एक आदर्श उपस्थित किया था। यह ऋषि मात्र मानवों से ही नहीं, देव देवेन्द्रों से भी पूजित है। इनसे क्षमा माँगो अन्यथा भक्त यक्ष प्रलय खड़ा कर देंगे।

कोलाहल कर रहे सभी ब्राह्मण सुभद्रा की चेतावनी सुनकर खामोश हो गये। दैवी प्रकोप के सामने कौन घुटना नहीं टेकता?इतने में तो सुभद्रा ने देखा कि जिन ब्राह्मणों ने मुनि पर पत्थर बरसाये थे वे खून की उल्टियाँ कर रहे थे। सुभद्रा सारा रहस्य समझ गयी। उसने पुनः ब्राह्मणों से कहा-अगर स्वस्थ होना चाहते हो तो इन मुनिश्री से क्षमा माँगो।

वे ब्राह्मण तत्काल उठे। उन्होंने अपने अपराध की क्षमा याचना की। यक्ष उनकी स्तुति से संतुष्ट हुआ एवं सभी को स्वस्थ बनाकर मुनि के शरीर से निकल गया। मुनि तो शांत रस में डूबे हुए थे। उन्होंने सभी को प्रतिबोध देते हुए कहा-बंधुओं! सच्चा यज्ञ तो अंतरशुद्धि में है। बाह्यशुद्धि से क्या लाभ मिलने वाला है! अन्तर की सफाई आवश्यक है। कषाय-त्याग ही सच्ची पवित्रता है। बाह्य पवित्रता कोई महत्व नहीं रखती।

रूद्रदेव, सुभद्रा एवं अन्य ब्राह्मण प्रतिबुद्ध होकर जैन दर्शन के अनुयायी बने एवं मुनिश्री को भक्ति सहित आहार दान दिया।

मुनि धर्मलाभ का आशीर्वाद देकर वहाँ से विहार कर गये। संयम रस में निमज्जन करते हुए केवलज्ञान प्राप्त कर अनेक आत्माओं को आत्मपथ दिखाकर निर्वाण पद प्राप्त किया।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम
जीवन की अनुमोदना

फलों से भी अधिक खुशबुदार
जीवन बने आपका
फलों से भी अधिक मधूर
जीवन बने आपका
अभिनंदन की वेला पर
आपको वंदन
सूरज से भी तेजस्वी
जीवन बने आपका

प्रेरणा : परम पूज्या स्नेह सुरभि
पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)

श्रद्धावंत

Naresh Sanklecha,
Suresh Sanklecha,
Anil Sanklecha

Moksh - Stop think 'n' Stop

- kids wear
- Toys Collection
- New Born Bady Accessories

184 # Mahaveer Rood,
Vijapur-586101
Tel. : 08352-251791
Marudhar- Samadri

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री शीतलनाथ जिन स्तवन

एम अनंत दानादिक निज गुण, वचनातीत पंडूरजी।
वासन भासन भावे दुर्लभ,प्राप्ति तो अति दूर जी, शी. ।९।

इस प्रकार दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य आदि प्रभु के अनंत गुण हैं जो अवाच्य है। मुझ जैसे को तो उनकी प्राप्ति होना तो दूर, उसके प्रति श्रद्धा भी हो जाय तो भी धन्यता की अनुभूति कर लूं। श्रद्धा भी दुर्लभ है।

प्रस्तुत पद्य में प्रभु महावीर द्वारा प्ररूपित चार दुर्लभ वस्तुओं में से श्रद्धा की दुर्लभता को विवेचित कर रहे हैं। प्रभु को अनंतदानी-औढरदानी-महादानी कहा है। प्रश्न होता है- कैसे?जहाँ रागभाव वहाँ अप्रत्यक्ष रूप से द्वेष के बीज होंगे ही। राग बढ़ेगा तो द्वेष भी बढेगा। तो वैसे ही राग घटेगा तो द्वेष भी घटेगा। प्रभु वीतरागी तभी बनते हैं जब राग और द्वेष दोनों ही समाप्त हो जाते हैं। राग अर्थात् व्यक्ति विशेष के प्रति आसक्ति। जब वह राग भाव संपूर्ण सृष्टि के कल्याण में समाता है तो वही राग करुणा बन जाती है। प्रभु मं अनंत करुणा सहज है ओर इसी करूणा भावना के कारण जो कुछ भी उनके पास है, संपूर्ण सृष्टि को देते रहते हैं। यह विश्ववत्सलता ही दान है।

प्रभु समस्त कामनाओं से परे हैं। जहाँ कामनाऐं है वहाँ दरिद्रता है। वस्तुओं का अभाव रहे या न रहे परंतु हृदय में कुछ और पाने की चाहत जब तक है तब तक दरिद्री ही माना जायेगा। दरिद्रता का अंत ही वैभव का सूचक है। प्रभु की सारी आकांक्षाऐं स्वत: शांत हो गयी। अत: सीमाहीन अनंत संपदा के मालिक है। और यही अनंत लाभ है।

प्रभु अनंत भोगी है। इन्द्रियों से एवं मन से मिलने वाला भोग सीमित है क्योंकि संसार में भोग्य पदार्थ अनंत है। जो किसी भी व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होते और जितने उपलब्ध होते है उतने भी भोगे नहीं जाते। अत: इन्द्रियों से मिलने वाला भोग सीमित, विघ्न युक्त और अपूर्ण है। परंतु जो इन्द्रियाधीन सुखों का त्याग कर स्व में रमण कर लेता है, अनंत भोग, अनंत रस और अविनाशी आनंद को उपलब्ध हो जाता है। विषय सुख का पूर्ण त्याग ही वीतरागता है। अत: वीतराग प्रभु में अनंत, अक्षय, अखूट सौन्दर्य और उसका भोग है। संसार की किसी घटना से वे सर्वज्ञ होते हुए भी व्यथित नहीं होते।

एक ही वस्तु बार-बार जब उपयोग में आती है तब वह उपभोग कहलाता है। वस्तुओं से प्राप्त होने वाला आनंद, उसकी मधुरिमा स्थायी नहीं होती। जितना आनंद पहले क्षण में है उतना आनंद फिर दूसरे क्षण में नहीं आता।

हम जैसे किसी बाजार से गुजर रहे हैं। अनेकों दुकानें सामने आती है और पीछे छुटती रहती है। वैसे ही वस्तुओं से आने वाला सुख आता है और चला जाता है। प्राप्ति नहीं होती बल्कि हवस और अधिक बढ़ जाती है। विषयों से पैदा होने वाला सुख, सुख की बजाय दुख ही अधिक देता है। प्रभु विषय सुखों का त्याग कर वीतरागता को उपलब्ध हुए हैं। उन्होंने वस्तुओं में सुख खोजने की बजाय संपूर्ण जगत के लिये स्वयं का हृदय खोल दिया। सारा संसार उनकी प्रेम सलिला में समा गया। आंतरिक प्रेम भावना का कभी क्षरण नहीं होता वह तो नित नये रूपों में फैलता जाता है। यह आंतरिक प्रेम अनुपमेय है। इसी आंतरिक और अक्षय प्रेम सागर के प्रभु स्वामी है। यही अनंत उपभोग है। इसमें न तृप्ति है, न अतृप्ति है। विलक्षण और चमत्कार से भरा है यह प्रेम! पर इसकी उपलब्धि वीतराग ही कर सकता है। श्रीमद् कहते है, प्रभु के इस अखूट कोष पर मेरी श्रद्धा हो जाय तो मेरे लिये तो यही सर्वश्रेष्ठ साधना है।

वीर्य शक्ति का सूचक है। प्रभु परम शक्तिवान् है

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम जीवन की अनुमोदना

छोटी उम्र की अल्पायु में
छोड़ दिये संसार को
चंपा गुरूवर्या ने महकाया
एसे सुनदर फूल को

सारी दुनियां बधाई दे आज एसी साधिका को
जिसने अर्पण किया जीवन अपना संयम वेष को

प्रेरणा : परम पूज्या स्नेह सुरभि
पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)

श्रद्धावंत

शा. जेठमल, बाबुलाल, रतनचंद, दिलीप कुमार, महेन्द्र कुमार,
कांतिलाल, आनन्द, भरत, श्रीपाल, सिद्धार्थ, अरिहंत,
श्रेयांस, हर्षित, दक्ष समस्त पालरेचा परिवार
मरुधर में मोकलसर - हॉस्पेट

स्व. गिरधारीलालजी पालरेचा

फर्म

Babulal Jain & Co.

Arihant Complex, Hampi Road,
Hospet-583201

स्व.श्रीमती सुखीदेवी पालरेचा

क्योंकि क्रिया में अथवा प्रवृत्ति में शक्ति चाहिये। और प्रवृत्ति तब होगी जब कोई इच्छापूर्ति करनी होगी। प्रभु में इच्छा नहीं है। और जब इच्छा ही नहीं है तब प्रवृत्ति किसमें करें?और जब प्रवृत्ति की पराधीनता ही हो तो असामर्थ्य से स्वत: मुक्ति मिल जाती है। निवृत्ति में किसी पर की अपेक्षा नहीं होती। और जहाँ पर की अपेक्षा अथवा पराधीनता न हो तो वहाँ संपूर्ण स्वतंत्रता है। और यह संपूर्ण स्वतंत्रता ही अनंत वीर्य है। प्रभु का करना, भोगना, पाना कुछ भी शेष नहीं रहा।

सकल प्रत्यक्षपणे त्रिभुवनगुरू, जाणुं तुज गुणग्रामजी ।
बीजु कांई न मांगु स्वामी, एहिज छे मुज कामजी, शी ।१०।

आप जैसे तीन लोक के स्वामी को पाकर मात्र इतना ही निवेदन कर रहा हूँ कि मैं तुझे समझ लूं। तेरे गुणों का परिचय पा लूं और मुझे कुछ नहीं चाहिये प्रभु! इतना अनुग्रह तो मुझ पर कीजिये प्रभु! और मुझे कुछ भी किसी प्रकार का काम नहीं है।

श्रीमद्जी प्रभु के गुणों का विवेचन करते हैं, पर कुछ नहीं मांगते। वे परमात्मा से कुछ भी देने का आग्रह नहीं करते। वे तो नम्रीभूत होकर मात्र एक ही अनुग्रह हेतु निवेदन कर रहे हैं कि इतना कार्य आप कर दो। आगे का कार्य आत्मबल से स्वयं ही मैं कर लूंगा। यहाँ खुद का आत्मविश्वास नेपथ्य में है। प्रभु के गुण एक बार श्रद्धा के साथ हृदय सिंहासन पर स्थापित हो जाय तो उन्हें पाये बिना चैन मिल सकता?अश्वत्थामा ने तभी तक आटे और पानी के मिश्रण को दूध की बुद्धि से स्वीकार किया जब तक उसे पता न चला कि दूध कैसा होता है?एक बार स्वाधीनता का आनंद समझ में गहरे पैठ जाय तो क्या उसे पाने के लिये यह कटिबद्ध नहीं होगा। फिर श्रीमद्जी तो पुरूषार्थ के प्रखर हिमायती है। वे प्रभु की कृपा, उनका अनुग्रह जरूर चाहते हैं पर निष्कर्म और निठल्ला होकर मात्र भगवान के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठने के भी तो विरोधी है।

एक देवी के मंदिर में व्यापारी भागा-भागा पहुँचा। उसके पीछे कोई डाकू पडा था। संयोग से मंदिर की प्रतिमा में साक्षात् देवी का आगमन था। उसने देवी के पैर पकडे और अनुनय करते हुए कहा- हे देवी मां! मेरी रक्षा करो। मेरे पीछे डाकू है। मुझ पर कृपा कर मुझे बचाओं। देवी ने तुरंत कहा- जैसे ही तुझे डाकू दिखे तूं जोर से हुंकार करना। वो भाग जायेंगे। उसने कहा- देवी! मेरी तो जीभ ही लडखडा रही है। देवी ने कहा- अच्छा यह मेरी मूर्ति से तलवार खींच ले। डाकुओं को देखते ही इसे घुमाना, वे भाग जायेंगे। उसने कहा- मेरे हाथों में इतना अधिक कंपन है कि मैं तलवार चलाना तो दूर उसे थाम भी नहीं सकता। देवी ने कहा- तूं कुछ मत कर मात्र मेरी मूर्ति के पीछे आकर छिप जा। उसने कहा- भय के मारे मेरे पाँव ही चिपक गये हैं, चलूं कैसे?देवी ने कहा- अच्छा तूं इस मंदिर का मुख्य द्वार बंद कर ले। उसने कहा- माफ करो देवी! मैं कुछ भी नहीं कर सकता। जो कुछ करना है आपको ही करना है।

देवी ने आक्रोश से कहा- कायर! बचना तुझे है और हाथ पाँव कुछ भी नहीं हिलाना है?क्या जीवन कायरता से बचता है?ऐसे अकर्मण्य व्यक्ति को कोई नहीं बचा सकता। जा भाग जा यहाँ से।

श्रीमद्जी के हृदय में पुरूषार्थ और श्रद्धा दोनों पर अखंड विश्वास है। आगे बढने का पुरूषार्थ स्वयं करना चाहते हैं पर अनुग्रह का संबल भी चाहते हैं।

एम अनंत प्रभुता सद्दहता, अर्चे जे प्रभुरूपजी।
देवचंद्र प्रभुता ते पामे, परमानंद स्वरूपजी, शी, ।।११।।

इस प्रकार प्रभु की प्रभुता पर अनंत श्रद्धा रखकर जो उनकी भक्ति करता है, वह श्रीमद् देवचंद्रजी के अनुसार परमानंद स्वरूप का भोक्ता हो जाता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी के हृदय का अखंड विश्वास प्रतिबिम्बित हुआ है। उन्हें विश्वास है कि प्रभु की पूजा और उन्हें प्रेम करने वाला प्रभु बने बिना रहता ही नहीं है। प्रेम का धरातल यही है कि दोनों समान हो। प्रभु से प्रेम करने वाला हमेशा के लिये भक्त बनकर नहीं रहता, अपितु वह भी भगवान को उपलब्ध हो जाता है। वह प्रेम किस काम का जहाँ पर असमानता हो।

जैन दर्शन की यह निश्चित और अनूठी धारण है कि प्रत्येक चेतना बीज रूप में भगवान् है। अगर पुरूषार्थ करे तो निश्चित ही जैसे बीज वटवृक्ष बनता है, वैसे ही जीव भी शिव बन जाता है। जैन दर्शन ही एक ऐसा दर्शन है जिसने जीव मात्र को निश्चय नय से सिद्ध का संबोधन देकर गौरव गरिमा प्रदान की है।

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ

फलोदी नगर की राज दुलारी खिली हैं संयम से फुलवारी
सूर्यप्रभा श्री गुरुबर्या प्यारी बधाई देती है हुबली नगरी सारी

जिनमंदिर दादावाडी प्रेरिका :

परम पूज्या मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

परम पूज्या स्नेह सुरभि पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा.

श्रद्धावंत

श्री आदीनाथ जिन मंदिर जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट

गब्बूर रोड़, हुबली-580028 (कर्नाटक)

फोन : 0836-4261809 मो. 09448468512

32
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

विदा, फिदा और अलविदा

जीना उसी का नाम है जो होश से जीया जाये। इससे भी आगे, मरना उसी का नाम है, जो समाधि से स्वीकार किया जाय।

– हर सूर्य अस्त होने के लिये उगा है।

– हर संयोग वियोग में बदलने के लिये हुआ है।

– हर फूल मुरझाने के लिये खिला है।

ये तीन शाश्वत नियम जिसे याद रह जाये, फिर तो यम भी उससे पराजित हो जाता है। क्योंकि उसका जीवन इतना सुन्दर, सजग, सरल और सुवासित होता है कि मृत्यु महक उठती है। मानो जीवन उत्सव बना और मृत्यु महोत्सव।

यह सब संभव उसी श्रमण के लिये हैं जिसने धर्म को जाना, माना और पहचाना है। हजार सुविधाओं में जीने वाला संसारी जिस समाधिमरण को तरस जाता है, उसी समाधि मरण को साधु सहजता से साध लेता है। किसी पत्रिका में एक सुन्दर मुक्तक छपा है–

लोग रोते–रोते देंगे विदा।
वो मुस्कुराते कहेंगे अलविदा।।
ये करिश्मा है फकीरी का,
इसलिये फरिश्ते भी होते हैं फिदा।।

एक उत्प्रव्रजित श्रमण की मृत्यु पर चिन्तन आठवीं गाथा में कर रहे हैं।

पुत्तदार परीकन्नो, मोह संताण संतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ।।8।।

अर्थात् पत्नी, पुत्र, पुत्री आदि में स्नेही बना गृहवासी साधु बाद में उसी प्रकार पश्चात्ताप करता है जैसे दल–दल में फंसा हाथी।

गजराज नदी पार खिले पुष्प को देखकर मोहित हो जाता है। 'अरे! ये सुन्दर गुलाबी कमल मुझे चाहिये।' आसक्ति में वह चल पडता है, पर ज्यों–ज्यों आगे बढता है, त्यों–त्यों दलदल में धँसता जाता है।

अब पिछला किनारा दूर छूट गया है और अगला छोर पाने की कोई सम्भावना भी नहीं है, तब वह अपने अपकृत्य पर अत्यन्त व्यथित होता हुआ विलाप करता है। हजारों प्रयासों, विचारों और विकल्पों में उलझा हाथी पंक के बीच मृत्यु की गोद में सदा–सदा के लिये सो जाता है।

ठीक ऐसी ही स्थिति पथभ्रष्ट श्रमण की होती है। मोह और स्नेह के तार में बंधा वह संसार में तो चला जाता है पर बाद में जब वहाँ के स्नेह में छिपे स्वार्थ रूपी यथार्थ का पता लगता है, जब सम्बन्धों में संघर्ष की चिंगारी उठने लगती है, जब मोह की खुमारी उतर जाती है, तब वह उत्प्रव्रजित श्रमण पंक–मग्न हाथी की भाँति अतीव दुःखी होता है एवं पश्चात्ताप करता है।

हे श्रमण! तूं जरा स्तंभित होकर विचार कर।

ये संसार दलदल के समान है। हजार कष्ट सहकर तूंने इससे निजात पायी है और अब फिर से उसी में फँसना चाहता है। नहीं वत्स! नहीं, दुनिया के दलदल के एक बार फँस गया तो फिर गया, फिर कोई भी तुझे बचा नहीं सकेगा।

तूं संताप करेगा। तूं पश्चात्ताप करेगा। तूं अनुताप और विलाप करेगा और पापों की परम्परा तुझे दुर्गति के गर्त में गिरा देगी।

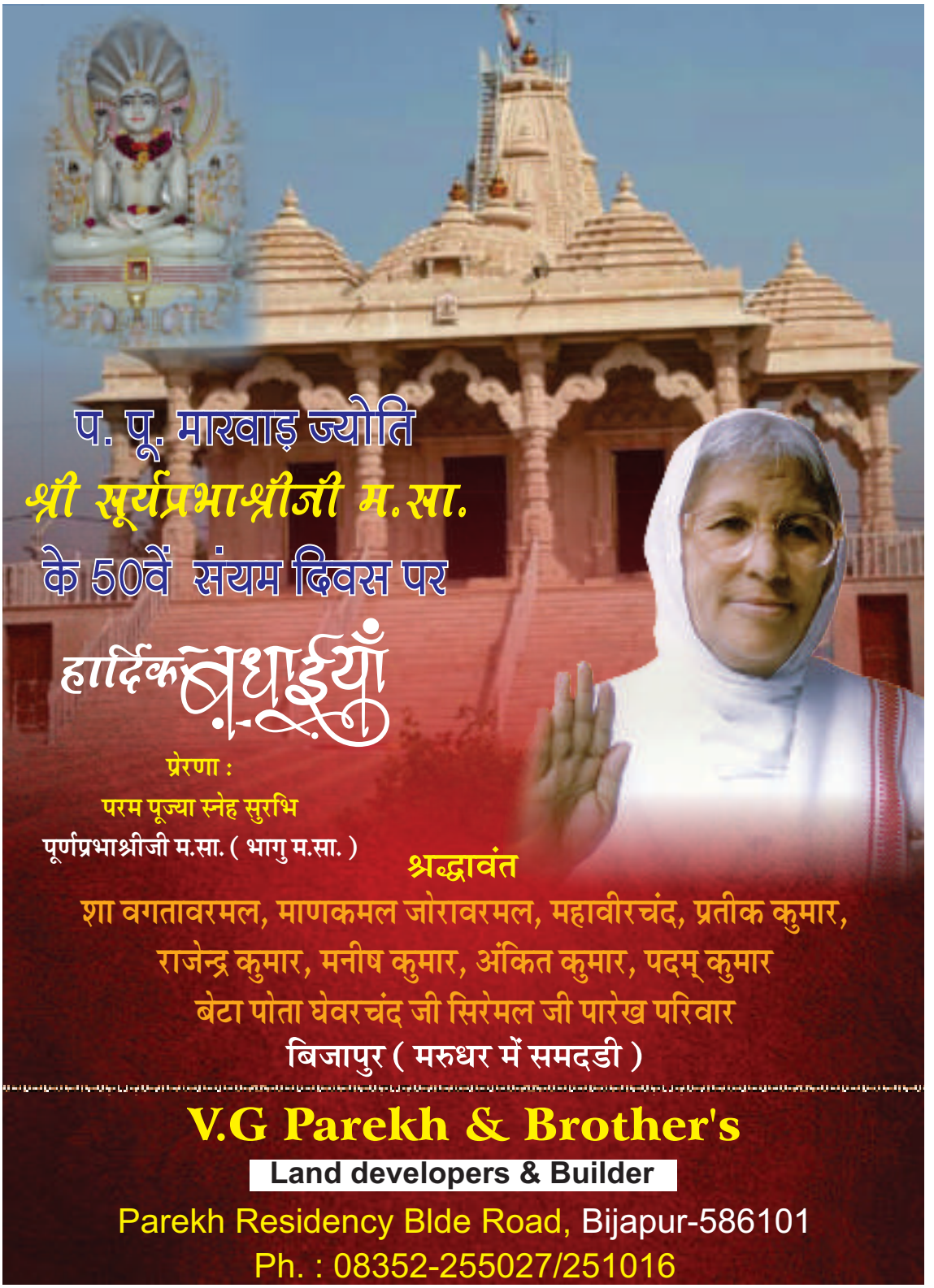
प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ
प्रेरणा :
परम पूज्या स्नेह सुरभि
पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)
श्रद्धावंत
शा वगतावरमल, माणकमल जोरावरमल, महावीरचंद, प्रतीक कुमार,
राजेन्द्र कुमार, मनीष कुमार, अंकित कुमार, पदम् कुमार
बेटा पोता घेवरचंद जी सिरेमल जी पारेख परिवार
बिजापुर (मरुधर में समदडी)
V.G Parekh & Brother's
Land developers & Builder
Parekh Residency Blde Road, Bijapur-586101
Ph. : 08352-255027/251016

स्मृति-विशेष

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

असमय में जीवन दीप बुझा

1 जनवरी 2016 का सूर्यास्त हो चुका था। उसके साथ एक उदीयमान श्रावक अनन्य सेवाभावी महेन्द्र बरडिया के जीवन का सूर्यास्त हृदय में एक शून्यता, रिक्तता और पीडा भर गया।

कुछ पलों तक मैं स्मृतियों के झरोखे से उसे झांकता रहा।

महेन्द्र का जन्म एक धार्मिक, प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। चूलै का यह बरडिया परिवार समाज में अपनी गहरी पैठ और उज्ज्वल छवि लिये हुए है।

जब पूज्य गुरुदेवश्री का 2005 का चातुर्मास श्री चंद्रप्रभु जून मंदिर चेन्नई में था तब उसका परिचय मात्र था पर जब इस बार अप्रेल 2015 में धर्मनाथ मंदिर प्रतिष्ठा एवं माँ-पुत्र की दीक्षा के निमित्त पुन: चेन्नई जाना हुआ तब वह पुराना परिचय प्रगाढ़ अपनत्व में बदल गया।

महेन्द्र, दुबला-पतला पर गौर वर्णीय! स्वभाव से मीठा और सेवाभाव से अनूठा। होंठो पर मुस्कान और आँखों में समर्पण मिश्रित स्नेह-सद्भाव! बाह्य और आभ्यंतर गुणों की संपदा से छलकता महेन्द्र पूज्यश्री से ही नहीं, पूरे मणि मंडल से दूध में शक्कर की तरह एकमेक हो गया और समय ही नहीं लगा।

एक दिन उसने कहा-मरासा! मैंने बापजीसा को अपना गुरु मान लिया है। वे ही मेरे गुरुदेव और ये ही मेरा धर्म-परिवार !

मैंने पूछा-ऐसा क्या हुआ ?

उसने कहा-मरासा! घटना यहाँ प्रतिष्ठा-प्रवेश के दिन की है। बापजीसा प्रवचन की शुरुआत कर रहे थे। अव्यवस्थित माईक को मैंने सेट करना चाहा, तब उस समय मेरा ध्यान न रहा और असावधानी से माईक बापजीसा के नाक से लग गया। मुझे तो जैसे झटका लगा-अरे! यह क्या कर दिया मैंने पर बापजीसा के मुख पर वैसे ही मुस्कान थी। न गुस्सा, न नाराजगी। वास्तव में इतनी-ऐसी सरलता, मृदुता और मधुरता और कहीं नहीं देखी।

पुण्योदय से धर्म एवं संस्कारों से सुवासित परिवार उसने पाया ही न था अपितु अपने सदाचरण से उसे अधिकाधिक पल्लवित-सुगंधित करने का भी काम किया था।

महेन्द्र का हर काम 'चन्द्रप्रभु भगवान की जय' से ही शुरु होता था। तप, जप, मंदिर दर्शन-पूजन, सत्संग, गुरुसेवा उसकी सुकृत आराधना के अभिन्न अंग थे और रात्रि भोजन, कंदमूल, अभक्ष्य आदि दुष्कृत्य के त्याग से उसका जीवन सुसज्जित था।

उसकी पारिवारिक पृष्ठ भूमि भी गौरवशाली है। उसकी दो बहिने गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म.सा. एवं प्रियमंत्रांजनाश्रीजी के नाम से संयम जीवन में साधनारत हैं। महेन्द्र की स्वयं की भी दीक्षा की प्रबल भावना थी। वैवाहिक जीवन की उसे तनिक भी स्पृहा न थी। आजीवन ब्रह्मचर्य की भीष्म प्रतिज्ञा का धारक महेन्द्र जिससे भी मिलता, अपने सेवा गुण एवं मधुर स्वभाव से उसका मन मोह लेता।

उसकी रग-रग में सेवा का रक्त बहता था। अभी चातुर्मास के बाद तीन दिन से डेंगु से ग्रस्त होने पर भी उसने विहार के दौरान सेवा का क्रम न तोड़ा। अब इस दर्दनाक घटना को आयुष्म कर्म की प्रबलता कहे या महेन्द्र की स्वयं के प्रति लापरवाही कहे या भाग्य का संयोग। कुछ भी माने पर उदास मन एवं पीडित हृदय से उसकी विदाई-जुदाई को स्वीकार करना ही होगा।

'सेवा गुण अप्रतिपाती होता है' इस तथ्य पर यह निश्चित है कि जिनधर्म की निर्मल-निर्दोष आराधना कर महेन्द्र अल्पभावों में परम मोक्ष गति को प्राप्त करेगा।

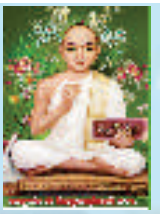

प्रेरिका - प.पू. स्नेह सुरभि पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा.

श्रद्धावंत

श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्

शाखा- कोटुर (कर्नाटक)

41
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

संध्या की प्रतीक्षा में हमारा दिन बीतता था। पूज्य गुरुदेवश्री अपने अनुभवों का खजाना खोल रहे थे। हम उनके बचपन के संस्मरण श्रवण कर रहे थे। हमारे मन में जिज्ञासा थी कि पूज्यश्री ने तेरापंथ छोड कर खरतरगच्छ में दीक्षा कैसे ली! किस प्रकार ली! बीच का समय कैसे बीता!

हमने अपनी जिज्ञासा पूज्यश्री के सम्मुख प्रस्तुत की।

पूज्यश्री बहुत ही अच्छे मूड में थे। लगता था- पहली बार ऐसे प्रश्नों का वे उत्तर दे रहे थे। अपने अनुभव सुनाते हुए उनका मन बहुत हल्का अनुभव कर रहा था।

पूज्यश्री अपने अतीत में उतर गये।

दो पल के बाद उनके होंठ हिले और उनसे शब्दों का माधुर्य छलकने लगा। आवाज में गंभीरता थी। वे छोटे छोटे वाक्यों में उस समय का वाकया सुनाने लगे।

मैंने यह तो तय कर लिया था कि मुझे मंदिरमार्गी होना है। पर यह तय नहीं कर पाया था कि किनके पास जाना है। मैंने संयम का त्याग नहीं किया था। मैं पिताजी म. को नमन कर अकेला ही चल पडा था।

गांव के किनारे तक पहुँचा था कि कुछ श्रावक लोग मेरे पीछे आये। और उन्होंने मेरा रजोहरण, पुस्तकें, मेरी डायरी आदि ले ली। उन्होंने कहा- यह संपदा आपकी नहीं, तेरापंथ धर्मसंघ की है। आप इन्हें नहीं ले जा सकते।

मेरे मन में विचार जरूर आया कि मेरी डायरी मेरे द्वारा ही लिखी गई है। वह मेरी पूंजी है।

पर मैं तर्क करने की स्थिति में नहीं था। मैंने उनके तर्क का सामंजस्य अपने विचारों में किया। रजोहरण उनका ही है। डायरी जब लिखी गई थी, तब मैं उस धर्मसंघ में ही था। तो अधिकार उनका ही होगा। मैं इसके लिये क्यों चिन्तित

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

श्रद्धावंत

स्व. श्री घेवरचन्दजी पालरेचा

बसन्त कुमार, जितेन्द्र कुमार, कुमारपाल,
देवेन्द्र कुमार, जय कुमार, ओजस कुमार, दर्श कुमार
बेटा पोटा घेवरचंदजी पालरेचा

BESANT ENTERPRISES

Insudtrial Suppliers

No. 1473, Jain Colony, Demroad, HOSPET-583203 (Kar.)

(मरूधर में मोकलसर)

बनूं।

वे छीनने की क्रिया कर रहे थे और मैं उन्हें सौंपने की! संभवत: उन्होंने विवाद का सोचा होगा। इसलिये बडी संख्या में युवा आये थे। पर मैं पूर्ण सहज था। मेरी इस सहजता पर वे आश्चर्यचकित भी थे।

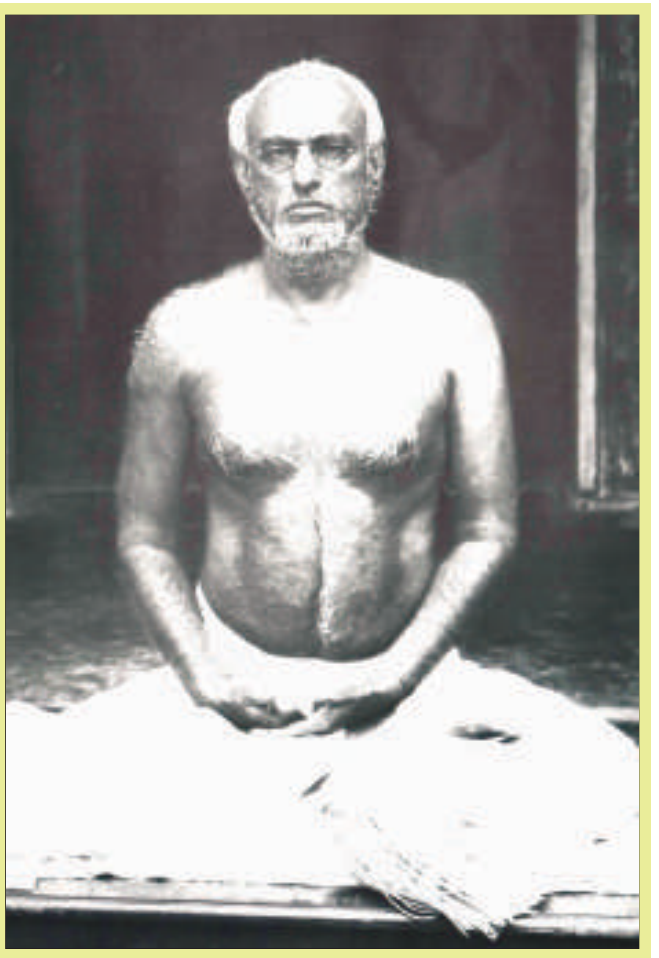

मैं बिना रजोहरण साधु वेष में चल पडा। कहाँ जाना! किधर जाना! संसार में जाने की तो बात ही नहीं थी। क्योंकि तेरापंथ का त्याग मैंने किसी पीडा के कारण नहीं, अपितु सिद्धान्तों के कारण किया था।

मुझे सुजानगढ निवासी श्री पन्नेचंदजी सिंघी मिले। उनसे वार्तालाप हुआ। मेरे तेरापंथ त्याग की खबर बहुत जल्दी पूरे थली प्रदेश में फैल गई थी। इसीलिये श्री सिंघीजी मिलने आये थे। वे मंदिरमार्गी श्रावक थे। सुजानगढ का सुप्रसिद्ध मंदिर उनके द्वारा ही निर्मित था। उसकी प्रतिष्ठा पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संपन्न हुई थी।

तेरापंथ त्याग के दूसरे ही दिन श्री सिंघीजी मेरे पास आ गये थे। पहला दिन मेरा बाह्य समस्याओं के साथ बीता था। खाने पीने व रहने की समस्या उपस्थित थी। मैं दूसरे गांव में पहुँच गया था। वहाँ शिव मंदिर के ओटले पर बैठा था। गोचरी की व्यवस्था तो श्रावकों द्वारा हो गई थी। रात्रि विश्राम के लिये ओटला था ही!

श्री सिंघीजी ने सीधे सवाल किये। आपने तेरापंथ क्यों छोडा! मैंने सारी हकीकत बताई। उन्होंने कहा- अब क्या इरादा है!

मेरा जवाब था- साधु ही बने रहना है। पर मंदिरमार्गी होना है।

पूछा उन्होंने- कहाँ जाना है! कुछ तय किया है।

मैंने कहा- अभी तय नहीं किया है।

उन्होंने कहा- फिर मैं कहता हूँ, वैसा करो। मैं सिंघी गोत्र का हूँ। आप भी सिंघी गोत्र के हैं। एक ही परिवार के समझो। मेरा सुझाव है कि आप पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. सा. के पास पधारो।

और मेरे मन में उनकी बात जम गई। मैं आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. के पास पहुँच गया। उनके पास पहुँचने में मुझे लगभग डेढ महिने का समय लगा।

क्रमश:

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ

हम सफर तो अनेक मिलेंगे पर हम राही तो विरले ही मिलेंगे
साथ चलने वाले तो अनेक मिलेंगे पर राह दिखाने वाले तो विरले ही मिलेंगे
अपनापन जताने वाले तो अनेक मिलेंगे पर स्नेह वर्षाने वाले तो विरले ही मिलेंगे
पूण्य हो बलवान तो ही सूर्यप्रभा श्री जी समनेक दिला तो विरले ही मिलेंगे

प्रेरणा :
परम पूज्या स्नेह सुरभि
पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)

श्रद्धावंत

श्रीमति विमलादेवी-रतनलाल, श्रीमति कविता देवी-संजय कुमार जीरावला
ध्रुवी यशवी जीरावला

हाल नंदुरबार, पुणे (मरूधर में अजीत)

फर्म

कुशल रतन एजेन्सी - नंदुरबार (महाराष्ट्र)
कुशल सेल्स कोर्पोरेशन - पुणे (महाराष्ट्र)
मणिधारी सेल्स कोर्पोरेशन पुणे (महाराष्ट्र)

दस महाश्रावक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

1– आनंद श्रावक

यह घटना उस समय की है जब भारत के मानचित्र पर वाणिज्य ग्राम समृद्धि, कला और व्यापार का एक अनूठा केन्द्र बना हुआ था।

उन्नत अट्टालिकाएँ... हरे भरे बाग-बगीचों में फैलती खुशबू...स्थान-स्थान पर बिखरता शिल्प कला का सौन्दर्य...!

यह बाह्य सौन्दर्य जितना आह्लादक था, उतनी ही रोमांचकारी भीतर की मखमली कलाकृति थी। जनप्रिय, उदार हृदयी सम्राट् जितशत्रु की उदात्त भावनाएँ लोगों के मन पर प्रेम की रंगोली बनाती थी, वही जनसमूह का समर्पण भी हृदयसम्राट् के कदम-कदम पर निसार था।

नगर की समृद्धि का सौन्दर्य आज तो जैसे घुंघरू बांधकर नृत्य कर रहा था। उसकी महक...अणु-अणु में छायी गुलाबी खुशी का अंदाज आला-निराला प्रतीत हो रहा था।

विशाल राजपथ भी छोटा पड़ गया था। विराट् जनमेदिनी एक दिशा में खींची चली जा रही थी।

जन-जन की जुबां पर एक बात ही थी-चलो! चलो! सर्वजनहितैषी और कल्याणकारी प्रभु श्री महावीर पधारे हैं। कोई अश्व-रथ की सवारी लेकर तो कोई पैदल ही दौड़ पड़ा था समवसरण के अधिपति के दर्शन पाकर कृतकृत्य होने के लिये।

श्रेष्ठिवर्य आनंद वातायान से इस पवित्र दृश्य को निहार रहा था कि भीतर से आवाज आयी- क्या आप तैयार हैं?

आनंद बोला-प्रिये! मैं तो कब से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ। इतना विलम्ब कैसे हो गया?

पुष्पहार की प्रतीक्षा कर रही थी, कहती हुई शिवानंदा मुख्यद्वार की तरफ बढ़ गयी।

रथ सुसज्ज तैयार खड़ा था। सारथी ने करबद्ध होकर शीश नमाया। दम्पतियुगल पहुँच गया इष्टदेव के चरणों में।

श्रद्धा का पुष्प चढ़ाया...आस्था का दीप जलाया परन्तु आनंद का मन तो कहीं ओर ही था। प्रतिदिन सहज ही इष्टदेव में क्षीर-नीर की भाँति एकमेक हो जाने वाला आनंद का चित्त आज किसी अनजाने सौन्दर्य में खो गया था। न तो महावीर पहली बार वाणिज्य ग्राम में पधारे थे...न उनके दर्शन को जनसमूह पहली बार उमड़ा था। उसने देखा है कई बार-लोगों की आँखों में नाचती श्रद्धा और आस्था की ऊर्मियों को।

उसका मन उमड़ पड़ा था महावीर के दर्शन को। उनके अदृश्य दर्शन के आकर्षण में बंधा वह सब कुछ भूला बैठा। वह कब-कैसे पहुँचे समवसरण में, उसे ही पता नहीं था। उसका जैसे खुद पर नियन्त्रण ही नहीं रहा।

परमात्मा के दिव्य-भव्य ऋद्धि-समृद्धि से युक्त समवसरण में अतिशय नहीं, उसने सदा आडम्बर को देखा था परन्तु आज लुलि लुलि झुकी इन्द्राणियाँ और नृत्य करते देव-देवियों में उसे संसार की जगह प्रभु भक्ति दिखाई दे रही थी। सोने-चाँदी के अम्बार में भौतिकता का नहीं, वीतरागता का बिम्ब प्रतिबिम्बत हो रहा है, यह देख उसका हृदय-कमल श्रद्धा के अमृत से सिंचित हो गया।

जैसे-जैसे वह समवसरण के सोपान चढ़ रहा था, वैसे-वैसे भवोभव का कर्म-भारा उतरता जा रहा था। हल्केपन का यह अद्भुत अहसास उसे जहाँ आनंदित बना गया, वहीं श्रेष्ठिवर्य आनंद को परमात्मा के चरणों में उपस्थित देखकर जनसमूह अचंभित था।

यद्यपि उसकी सौहार्द्रता और सद्भावना के गुणों की निर्मल कीर्ति लोगों में चर्चा का विषय रही है, फिर भी उस वैभवपुंज से वीतराग के प्रति उछलता समर्पण उनके हृदय-समुद्र में आश्चर्य की तरंगों को जन्म दे रहा था।

आनंद प्रभु के सम्मुख नतमस्तक खडा है, हाथ सहज ही अभिवंदन-अभिनंदन की मुद्रा में जुड़ गये हैं।

परमात्मा के मुखकमल से जैसे बोधामृत से सुवासित फूल झर रहे हैं। कुतुहलवश अथवा ऋद्धि-वैभव के दर्शन

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

श्रद्धावंत

स्व. भंवरलालजी वैद

स्व.श्रीमती कमलाबाई वैद

स्व. भवरलालजी वैद स्व. कमलाबाई वैद के आशीर्वाद से

प्रकाशचंद- सौ जथीबाई , वीनोद कुमार- सौ. झंकारबाई, चन्द्रेश कुमार- सौ. बथीयाबाई,
प्रफूल- सौ. प्रीया, ललीत- सौ. दीपीका, रोहीत- सौ. रेणीका, सागर- सौ. सोनाली
अक्षय, अमीत, अमीताब, यश, भव्य, दक्ष, हर्षीता, जब्थी वैद परीवार सोलापुर

सौ. गवरा बाई - प्रेमराजजी बच्छावत, श्रीमती पुष्पा बाई - पारसमलजी बाफना
सौ. जसुबाला - लुणकरणजी चोपड़ा

फर्म

- सागर सींथेटीक्स
- बाबला ड्रेसेसे
- रोहीत क्रीयेशन
- रोहीत ट्रेडर्स
- सागर पारस
- अरीहंत डव्हलपर्स एण्ड बील्डर्स

हेतु आने वाला भी जैसे भीग गया है आप्त-गंगा के अमल प्रवाह में।

'परिग्रह-संग्रह और इच्छा-मूर्च्छा का आवरण बहुत सुन्दर है परन्तु वह हलाहल से भी भयंकर है। जहर एक बार मारता है परन्तु भोग-तृष्णा का जहर हजारों-लाखों भवों तक मारता है।' प्रभु-प्रवचन को सुनकर आनंद भीतर तक कांप गया।

वह मन ही मन बोल उठा- तो फिर मेरा क्या होगा? प्रभो!

चार करोड़ स्वर्ण मुद्राओं से भरे भण्डार!

एक गोकुल में दस हजार गायें, ऐसे चार गोकुलों का स्वामित्व!

विस्तृत व्यापार...वाहनों का अम्बार...!

क्या मुझे भी दुर्गति के गर्त में गिरना होगा?

हे भवोदधितारक! आपका कर पाकर भी यदि मैं भवारण्य में चक्कर लगाता रहा तो आपको पाने का अर्थ ही क्या रहा!

करूणानिधान! बचा लो मुझे! नहीं डूबना है भवसमुद्र में! नहीं भटकना है गहन भव-वन में।

परमात्मा से एकाकार हुआ उसकी आत्मा का कण-कण और प्रभु ने सुन ली उसकी पुकार!

वे बोले- आनंद! मैं जान रहा हूँ तेरी व्यथा को!

तुम्हारी पीड़ा लाईलाज नहीं है। दो रास्ते हैं इसके- एक है श्रमण मार्ग और दूसरा है श्रावक मार्ग!

बीच में बोलने के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ प्रभो! मैं तड़फ रहा हूँ संसार के इस कारागृह से मुक्त होने के लिये परन्तु मेरे जैसा दुर्भागी और कौन होगा जो आप जैसे अमर-पद दातार को पाकर भी भिखारी का जीवन जीता रहे।

श्रमण जीवन की कठोरता मैंने जानी है, देखी है, मैं उसके प्रति श्रद्धान्वित हूँ परन्तु इस कंटकाकीर्ण मार्ग का राही बनने की शक्ति मुझमें नहीं भगवन्!

कोई चिन्ता नहीं आनंद! श्रावक जीवन की भी अपनी गरिमा और महिमा है। अद्यावधि पर्यन्त अनन्त आत्माएँ इस दिव्य मार्ग पर चलकर अल्पभवों में आत्म-सिंहासन के निकट पहुँची हैं।

तो फिर भन्ते! श्रावकत्व के इस महान् गौरव से अभिमण्डित होने को उत्सुक हूँ। अतिशीघ्र बारह व्रतों की अनुपम सम्पदा प्रदान करके मुझे अपने संघ व शासन में दीक्षित करने की कृपा करें।

सकल द्वादश पर्षदा यह देखकर आश्चर्यचकित थी। भावों के गहरे सागर में गोते लगा रही थी उनकी विचार-कश्तियाँ- देखो तो सही इसका सत्त्व और समर्पण! दुर्गति का भय और मुक्ति की मंगलकामना!

हजार बार सुनने पर भी हम कोरे के कोरे रहे और इसने एक बार में ही जीवन-वस्त्र को भक्ति और वैराग्य के रंग में रंग लिया। धन्य है इसकी आत्महितैषी भावनाएँ!

प्रभो! इस श्रावकश्रेष्ठ का मार्ग निष्कंटक बने। आनन्द अतिशीघ्र ही असीम परमानंद का उपभोक्ता बने-हर भक्त हृदय के कोने से सहज ही भाव-सुमन प्रसारित हो गये।

इधर आनंद श्रेष्ठि ने प्रभु-मुखारविंद से श्रावक धर्म स्वीकार किया और उधर श्रद्धालुओं की आँखों के किनारे अनुमोदना मिश्रित आनंदाश्रुओं से भीग गये।

वह प्रभु की पुनः पुनः पर्युपासना से भाव-विभोर हो गृह के प्रति प्रस्थित हुआ। उसकी आँखों से छलकती पवित्रता और चेहरे से नितरती आभा शिवानंदा से भला कैसे छिपी रहती! सहज ही प्रकट हो गयी आनंद की आत्म-कथा। परिवर्तन की कथा सुनते उसकी आँखें... मुखमुद्रा... सघन समर्पण देख शिवानंदा हत्प्रभ हुए बिना न रही!

भोगोपभोग और ऐश्वर्य से विरक्ति और भक्ति में ढले आनंद के दिव्य स्वरूप को निहार कर वह रोमांचित थी।

मेरे जीवन की डोर जिनसे बंधी है, उनकी राह ही मेरी राह है। चिन्तन की यह चाँदनी उसे श्राविका का सुन्दर रूप दे गयी।

बढ़ती उम्र के साथ आनंद की साधना भी तेजी से उन्नति के सोपान पार कर रही थी। पूरे चौदह वर्ष पूरे हो गये।

एक दिन एक दिव्य मनोरथ आनंद के मन आंगन में उतरा- मुझे श्रावक जीवन की उत्कृष्ट उपासना की प्रतीक-रूप ग्यारह प्रतिमाएँ धारण करनी हैं।

प्रतिमा धारण करने की आराधना आत्मा की विशिष्ट साधना है। निर्बल सत्त्व, अधूरी श्रद्धा और अपरिपक्व वैराग्य से इसे पूर्ण करना असम्भव है। इसके लिये चाहिये उत्तरोत्तर बढ़ती आस्था, तपश्चर्या और संकल्प-साधना।

भिक्षु की भाँति पात्र धारण करके घर-घर जाना, गुप्ति-समिति का पालन करते हुए प्रतिमाधारी श्रमणोपासक के रूप में परिचय देना। श्रमण की भाँति आत्म-पुरूषार्थ में गतिशील रहना। जिनाज्ञानुरूप तप एवं श्रुतसाधना में तत्पर रहते हुए विधि-मार्गानुसार गमन करना।

(क्रमशः)

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

फूलों से भी अधिक खुशबुदार
जीवन बने आपका
फलों से भी अधिक मधूर
जीवन बने आपका
अभिनंदन की वेला पर
आपको वंदन
सूरज से भी तेजस्वी
जीवन बने आपका

श्रद्धावंत
श्रीमति मूली बाई -
हस्तीमल जी सांखला
के शुभाशिर्वाद से

शांतिलाल, प्रकाशचंद,
गौतमचंद, अशोक कुमार,
विमल कुमार, नरपत कुमार,
सुरेश कुमार, भरत कुमार,
प्रीतेश, राजू, हर्ष, श्रेणिक,
दर्शन, शाहिल कुमार सांखला

समदड़ी हाल बिजापूर

फर्म:- मिश्रीमल मगनाजी परिवार बिजापुर (कर्नाटक)

मधुर संस्मरण

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

समर्पित श्राविका धाई देवी की विदाई

समाचार मिला बाबुलालजी छाजेड़ से कि उनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया है। मैं लगभग 35 वर्ष पूर्व की स्थितियों में डूब गयी। मैं उस समय संसार से सम्पूर्ण अबोध,नादान मात्र 16 बसंत देख चुकी मासूम साध्वी थी। समझ के नाम पर लगभग जीरो ही थी। उस समय का वातावरण भी आज से एकदम भिन्न था। आज 10 साल की उम्र में 25 साल का ज्ञान होता है। उस समय जितनी उम्र होती थी, संभवत: उतना ही ज्ञान होता था क्योंकि संचार व्यवस्था ने इतने पैर पसारे न थे, पर मैं तो अपनी उम्र से भी बहुत पीछे थी क्योंकि मेरे घर का वातावरण अत्यन्त शांत और सामान्य था। दीक्षा के बाद भी सभी मेरे से बहुत बडी उम्र के थे।

पू. गुरूदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरि जी म.सा. की निश्रा में हमारा चातुर्मास बाड़मेर में था। आने-जाने की अनुकूलता रहे अत: गुरूवर्या प्र. श्री प्रमोद श्री जी म.सा. आदि हम सभी श्री आसुलालजी मालू के आवास में चातुर्मास संपन्न कर रहे थे। दीवार से सटा मकान था श्री जीवनमल जी नेमीचंद जी छाजेड का। पूरा परिवार धर्म से ओतप्रोत .... दानवीर... शासन भक्त... गुरूदेव से सर्वात्मना जुडा परिवार।

पूरा परिवार मुझसे गहरा जुड़ता गया। फिर भी दो व्यक्ति बहुत गहरे जुडे-परिवार की गृहलक्ष्मी अत्यन्त सरलमना पाप भीरू धाई बाई एवं उनकी उस समय दस वर्षीया बेटी।

गुरूवर्या श्री की विहारस्थिति न होने के कारण हमारा अगला चातुर्मास बाड़मेर ढाणी धर्मशाला में हुआ। अ.सौ. सुश्राविका धाई माँ का भक्तिनिष्ठ अपनत्व दिनोंदिन गहरा होता गया।

चातुर्मास में व्याख्यान का मेरा पहला अनुभव था। साध्वी श्री शासनप्रभा श्रीजी एवं धाई मां दोनों ने श्रावण माह में अट्ठाई की। दोनों की पहली अट्ठाई थी, अत: मुझे भी उत्साह था और उनके परिवार में भी उत्साह था। बाड़मेर में अट्ठाई का महत्व सामान्य ही है।

सभी की भावनाओं का सम्मान करते हुए तय किया गया कि पारणे का चढावा लिया जाए। धाई मां की भावनाओं को महत्व देते हुए चढ़ावा जीवणमलजी नेमीचंदजी परिवार ने लिया। आज उस राशि का महत्व नहीं है पर उस समय उस राशि का बहुत महत्व था।

यह घटना 1980 की है। उसके बाद 1982 में मां महाराज के वर्षीतप के पारणे का लाभ भी इसी परिवार को मिला था। हम लगभग दो साल तक ढाणी में रहे। उस समय सुश्राविका धाई मां ने जितना हमारा ध्यान रखा, मैं कभी भूल नही सकती।

इसी अवधि में उन्होंने सुपात्र दान की महिमा समझते हुए अत्यंत तीव्र भावों से निर्दोष आहार पानी की भरपूर व्यवस्था की।

उनका आना जाना रहना काफी होने लगा था। बहुत

हमारे परिवार की कुलदिपिका मारवाड़ ज्योति के

श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

50 वर्षीय संयम जीवन की अनुमोदना

पिता
ज्ञानचंदजी मालू

माता
तेजाबाई मालू

गुरुवर्या तेरे पंकज युग इस धरती पर जिधर चले
कदम कदम पर शुभ भावों के सुरभित स्वर्णिम पुष्प खिले

प. पू. मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रजी म.सा. के

संयम जीवन के 50वें दीक्षा दिवस पर शुभकामनाओं के साथ हम है आपके अपने

गौतमचंद-शोभा मालू
मोतीचंद-शशी मालू
शैलेशकुमार-चन्द्रकला मालू, कल्पेश मालू-अंजू मालू
राकेशकुमार-चाँदनी मालू
सौरभ, गुणिक, मोक्षित, दिशा, लिशा, तेजल मालू

Rakesh Medical & Jeneral Stores
No. 2, Ramlal Chowk, SOLAPUR
Tel. : (0217) 2720257

SPECTRA LIGHTS
14, Goldfinceh Peth, Sindhe Chowak
Tel. : (0217) 2725470

DISHA CONSULTANT
F-2, Vijayraj Tower, 15 A, Navi Peth SOLAPUR
Tel. : (0217) 2309042

ANADN MANGAL TRAVELS
Shop No. 5-6, 747 Purv Mangalvar Peth
Tilak Nagar, SOLAPUR
Tel. : (0217) 2325012

बार लोग नेमीचंदजी आदि को भ्रमित करते कि अब आपकी पत्नी पूरा दिन महाराज के वहाँ रहती है, लगता है वे दीक्षा ले लेंगी। उस समय बाड़मेर में दीक्षा का वातावरण न था, फिर भी नेमीचंदजी अपनी पत्नी से कुछ कहने या मना करने की अपेक्षा पूरा सहयोग करते थे।

उन दिनों की स्मृति जब भी मुझे आती है, मुझे लगता है अगर धाई माँ को जरा भी अक्षरज्ञान होता तो मैं उन्हें दीक्षा की प्रेरणा देती और उस समय वे मेरे साथ इतने अधिक आत्मीय थे कि शायद ले भी लेते। उनकी तो छोड़े उनकी पुत्री भगवती भी मुझसे इतनी तादात्म्य थी कि अगर मैं उसे भी संसार की असारता समझाती तो आज वह भी शायद साध्वी होती, पर बाड़मेर के वातावरण ने मेरे दिमाग में लम्बे समय तक यह धारणा बनाये रखी कि यहाँ कोई दीक्षा नहीं देगा।

भगवती पाँच भाइयों की इकलौती बहन, मैं उसकी दीक्षा की कल्पना भी नही कर सकती थी, परंतु माँ की धर्मनिष्ठा शायद उसके जीवन परिवर्तन में बहुत सहयोगी होती।

1982 में दसवीं की परीक्षा के लिए जब मेरा विहार हुआ तो उस समय न कोई विहार का अनुभव था, और न क्षेत्र का विस्तार था। मैंने विहार में व्यवस्था हेतु धाई माँ को कहा- हम विहार में दो ही साध्वी जी है। आप हमारे साथ चलियें।

यद्यपि उनकी अनुकुलता न थी और न उन्हें कभी विहार का अनुभव था। फिर भी वे तैयार हो गये। उस समय के विहार में आज जैसी स्थिति नहीं थी। पूरी प्रतिकूलता में भी अत्यंत प्रसन्नता से नाकोड़ा तक हम पहुंचे। इधर बाड़मेर में जैसे तूफान आ गया। चारों ओर एक ही बात... धाई माँ दीक्षा लेगी। नाकोड़ा नेमीचंदजी को आना ही पड़ा, और न चाहते भी उन्हें जाना ही पड़ा।

जिस समय मैं व्यवहारिक शिक्षा से जुड़ी थी। उस समय श्रावक संघ साधु-साध्वी भगवंतों की शिक्षा के प्रति इतना जागरूक न था। बाड़मेर चार्तुमास में तो फिर भी व्यवस्था हो गयी। पर जोधपुर में व्यवस्था हेतु कुछ परेशानी हुई। यद्यपि जोधपुर में खरतरगच्छ संघ सक्षम एवं समृद्ध था, पर संघ का कहना था कुशल भवन में जो रूकेगा, उनकी सारी व्यवस्था होगी। कुशल भवन में रूकना संभव न था। जोधपुर की सारी आवश्यकता की पूर्ति, उसमें चाहे विहार के लिए आदमी की हो या, अध्यापक, धाई माँ के निर्देशन पर संपत जी (धाई माँ के पुत्र)करते थे।

धाई माँ जितने वैयावच्च में जागरूक थे, उतने ही उदार भी थे। वे वाकई में लक्ष्मी पति थे। उनके अधिकार में जितनी भी राशि मांगी जाय, तुरंत स्वीकृत हो जाती थी। उदारता उनकी रग-रग में थी। नारी होकर भी खर्च करने में उनकी उदारता प्रशंसनीय थी। उनके परिवार में उनके ससुर की मृत्यु के बाद जितने भी बड़े-बड़े लाभ लिये गये, उसमें उनका ही योगदान था।

उन्होंने अपने जीवन में छोटे-छोटे लाभ तो कई लिये पर तीन बड़े लाभों ने बाड़मेर के इतिहास में उन्हें अमर कर दिया।

1983 में गुरूवर्या प्र. श्री प्रमोद श्री जी म.सा. का स्वर्गवास हुआ। यद्यपि इस समय मेरी उम्र मात्र दो दशक थी, फिर भी मेरी भावना हुई कि गुरूवर्या श्री की स्मृति में कोई स्थायी चीज बननी चाहिए। संयोग से जिस बोथरा परिवार द्वारा मंदिर एवं भवन की भूमि प्रदान की गई थी, उससे लगता एक प्लॉट पड़ा था। मैंने परिवार से उस प्लॉट हेतु निवेदन किया। गुरूवर्या श्री के पुण्य... उन्होंने तुरंत स्वीकृति दे दी।

भूमि प्राप्त हो गयी। बहुत बड़ी उपलब्धि जैसा आनंद आया। दादाबाड़ी का निर्माण प्रारंभ हो गया। बाड़मेर संघ ने निर्णय लिया कि अगर कोई लाभार्थी तैयार हो जाय तो गुरूदेव की मूर्ति आदि का लाभ उन्हें दे दें।

मैंने धाई माँ को प्रेरणा दी। तुरंत उन्होंने इतने बड़े लाभ हेतु स्वीकृति दे दी। और संयोग से एक साल के अंदर-अंदर उसकी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न भी हो गया।

बाड़मेर में खरतरगच्छ का अपना स्वतंत्र आराधना स्थल न था। संयोग से पूजनीया श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा. की

आपके जीवन में हमेशा रोशनी रहे
हर सफलता आपकी चरण छुए
आपकी हर तमन्ना हो पुरी
50वें संयम जीवन की खूब खूब बधाई

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ

श्रद्धावंत

मफतलाल, दिनेशकुमार,
मनीषकुमार, ध्रुवकुमार,
ध्वजकुमार, नींवकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता
भानीरामजी पूनमचंदजी
पालरेचा (खिमोणी)
हॉस्पेट - मोकलसर

Firm

RAMESH ELECTRICAL

M.J.Nagar Dem Road
Near City Hospital
HOSPET-583201 (Kar.)
Cell : 09448371555

प्रेरणा से आराधना भवन निर्माण करना तय हुआ।

संघ ने विचार किया कि यदि समीप में स्थित नेमीचंदजी की मालिकी का प्लॉट प्राप्त हो जाय तो आराधना भवन का निर्माण और उसका लोकेशन अच्छा हो जायेगा।

यह प्लॉट परिवार की आवश्यकता थी । इधर-उधर से समाचार भी भिजवाये कि अगर यह प्लॉट मूल्य से अथवा फ्री जैसे भी देना चाहे संघ की आवश्यकता है। नेमीचंदजी का उत्तर नकारात्मक था। उन्हीं दिनों पूज्य उपाध्यायश्री का बाड़मेर पदार्पण हुआ। संघ विचार विमर्श करके पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. एवं प.पू. श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा. के साथ उनके आंगन में पहुँचा। चतुर्विध संघ का आगंन में पदार्पण देखकर परिवार की प्रसन्नता बढ़ गयी।

संघ के निवेदन पर पूज्य उपाध्याय श्री ने प्रेरणा देते हुए कहा- आज संघ आप से प्लॉट माँग रहा है। आप उदार हृदय से मूल्य से अथवा फ्री प्रदान करें। परिवार की आवश्यकता से संघ की आवश्यकता बड़ी है। संघ और उसमें श्री परिवारिक गुरू उपाध्याय श्री पधारे थे, उन्हें खाली लौटाना कहाँ संभव था। परिवार ने चर्चा की और अंत में कहा- संघ को इंकार करने का प्रश्न ही नही हैं, पर हमारी शर्त समझे या निवेदन कि आराधना भवन में एक कक्ष बनाकर उसमें परमात्मा अवश्य विराजमान करें। और परमात्मा के बिंब भराने एवं विराजमान का लाभ हमें मिले।

संघ ने इसे स्वीकार किया और इस प्रकार लाखों के मूल्य का प्लॉट परिवार ने सप्रेम संघ को प्रदान किया।

पूज्या गुरूवर्या श्री की स्मृति में बनी दादाबाड़ी मुझे शायद संतुष्ट नहीं कर पायी थी। मैंने कुशल वाटिका की कल्पना की। आसुलालजी डोसी परिवार द्वारा जमीन प्राप्त हो गयी।

कुशल वाटिका में विद्यालय निर्माण हेतु मैंने धाई माँ को प्रेरणा की। संपूर्ण स्कूल के लिए बड़ी राशि की अपेक्षा थी। इतनी बड़ी राशि की स्वीकृति उनके लिए सहज न थी पर धीरे-धीरे उन्होंने मन बना लिया। कुशल वाटिका में बनी भव्य जे.एन.सी. प्राथमिक विद्यालय उन्हीं की दृढता का परिणाम है।

जिस समय सन 2013 प्रतिष्ठा के अवसर पर इस विद्यालय का धाई माँ के हाथों, पूरे परिवार की उपस्थिति में उद्घाटन हुआ था, तब निसंदेह जितनी प्रसन्नता उन्हें हुई थी उतनी ही प्रसन्नता मुझे हुई थी कि उनकी भावना पूरी हो गयी।

स्वभाव से सरल... विचारों से पवित्र ... आँखों से निर्मल... आचार से धार्मिक धाई माँ बाड़मेर संघ एवं परिवार के लिए आदर्श श्राविका थी। दिन में कामकाज से निवृत हुई कि सामायिक और हाथ में माला। संभवत: आज तक उन्हें किसी ने किसी से इधर-उधर की पंचायती करते नहीं देखा। उनके लिए यही कहा जाता था कि उन्हें बातें करना आता ही नहीं है। घर में भी बहुत नपातुला ही बोलती थी।

सुश्राविका धाई बाई ने अपने परिवार को भरपूर संस्कार दिये हैं यही कारण हैं कि उनका पूरा परिवार सात्विक एवं धार्मिक है। उनके परिवार में सभी पुत्र एवं पुत्री वैयावच्च आदि में सक्रिय रहते हैं।

अभी जब कुशल वाटिका की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम था तब उनके जेष्ठ पुत्र श्री बाबुलालजी ने भव्य नवकारसी का एवं नवग्रह में मंदिर मे स्थापित होने वाले एक ग्रह का लाभ लिया था तो उनकी पुत्री श्रीमति अ.सौ. सुश्राविका भगवती श्री श्रीमाल जी बोहरा को भी संकेत करते ही उसने तुरंत कुशल वाटिका में स्थापित होने वाली आचार्य भगवंत श्री मज्जिन कांतिसागरसूरी की प्रतिमा की स्वीकृति दी थी।

निसंदेह उनकी विदायी से हमने अपनी एक परम धार्मिक उदार एवं शांत श्राविका खो दी है। हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें परम शांति प्राप्त हो और परिवार के सभी सदस्य अपने माता-पिता के द्वारा छोडी संस्कारों की विरासत को अखंड और अक्षुण्ण रखे।

प. पू. मारवाड़ ज्योति

श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 50वें संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

ना चाहिये मुझे चंदा
ना चाहिये मुझे सूरज
मुझे तो चाहिये सिर्फ गुरुवर्या
आपकी दिव्य चरण रज...

प्रेरणा :

परम पूज्या स्नेह सुरभि

श्रद्धावंत पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)

मोहनलाल, प्रवीणकुमार, कमलेशकुमार, ललितकुमार, अनिलकुमार,
कुशल, दीपक, कार्तिक, दिवम्, प्रीतम, प्रेमकुशल, देव

बेटा-पोता वंशराजजी छाजेड़

मरुधर में जीवाणा हाल हुविनहडगली

Firm

A.P.S. Hadagali

A.P.S. Surat

Deepak Traders

Huvina Hadagli

Cell : 09480391161

साध्वी पूर्णप्रभा श्री

मालू परिवार की कलि चंपावाटिका से खिली

जोधपुर जिला के फलोदी नगर में मालू परिवार के ज्ञानचंद जी की धर्मपत्नि तेजाबाई मालू की रत्नककुक्षी से जन्मी सुशीला मालू दो भाइयों की इकलोती बहना, इतने लाड प्यार से पली कि दीया कैसे जलाया जाए ये भी पता न था।

जन्म से ही तन नरम-गरम रहता, वो वक्त था सुशीला मालू के उम्र का 13 वाँ वर्ष स्कूल तो गये ही नहीं, गजाबाई की स्कूल अवश्य जाते जहाँ धार्मिक पाठशाला में धार्मिक के साथ साथ थोडी बहोत व्यवहारिक शिक्षा भी मिलती।

एकबार आपकी मातु श्री प.पू. चंपाश्री जी म. सा. की प्रथम शिष्या पू. जितेन्द्र श्रीजी म.सा. किशनलाल जी की धर्मशाला में प्रवचन दे रहे थे। प्रवचन के अन्तर्गत जंबु स्वामी का चरित्र चल रहा था। सुशीला घर की चाबी लेने मां के पास उपाश्रय में पहूंचे वहाँ घर की चाबी ही नही मोक्ष के राह की चाबी मिल गई प्रवचन के शब्द वे ही जंबुस्वामी के चरित्र के शब्द कर्ण पटलों से टकराए बस वे ही शब्द प्रेरणा स्त्रोत बन गए, उन पर चिन्तन चल पड़ा जंबुस्वामी भी मेरी तरह इकलोता बेटा था मुझे भी जंबुस्वामी की तरह संयम ही लेना है ये छोटा सा निमित्त बरगद की भांति सामने आया, ''एक कदम संसार से संयम की ओर'' चिन्तन भरे उन कदमों में इतना तेज और ओज था कि संयम का निर्णय लेते ही तन की बिमारियाँ नदारद मानों एक चमत्कार हुआ है अन्यथा प्रतिवर्ष 2-3 बार निमुनियाँ हो ही जाता सर्दी बुखार जैसे घर कर गए थे। परिजनों ने कठीनतम परीक्षाएँ ली किन्तु सबका परिणाम परिजनों के लिए निष्फल हों सुशीला मालू जरूर संयम के लिए उत्तीर्ण हो गई बहुत समझाया माँ-बाप की एक ही बेटी हो घर में रह कर भी धर्म किया जा सकता है संयम की कहाँ जरूरत है ? सुशीला मालू का ये जबाव रहा कि आप सोचते होंगे में दुखों से दुखी होकर संसार का त्याग कर रहीं हूँ किन्तु मैंने माता-पिता एवं दोनों भाइयों के लाड प्यार में दुख तो क्या दुख की परछाई भी नहीं देखी, दुख किस सीढ़ी का नाम है वो भी मुझे पता न था। किन्तु सदा सदा के लिए में अपनी ओर से छः काय जीवों को अभय दान दूं। छः काय जीवों की विराधना करके संसार में मोज मजा करना इस सोच से मेरी आत्मा तडफ उठी। सुशीला ने उदाहरण से भी समझाया कि सुनों- एक राजा था बहुत ही न्याय प्रिय और दान वीर था। एक दिन उनका जन्म दिन था। प्रजा को खुश करने के लिए दान की घोषणा की गई जिन्हे जो चाहिये वो मिलेगा। एक ने कहा- बहुत गर्मी है A.C. चाहिये, दूसरे ने कहा खाना बराबर नहीं होता षट्रस भोजन चाहिये, तीसरे ने कहा बोरिंग लग रहा है टाइम पास के लिए T.V चाहिये चौथे ने कहा अंधेरा बहुत है लाईट चाहिये,

प. पू. मारवाड़ ज्योति

श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 50वें

संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

चेहरा आपका खिला रहे गुलाब की तरह
नाम आपको रोशन रहे आफताब की तरह

श्रद्धावंत

पन्नालाल गौतमचंदजी पारसचंदजी कवाड़

तिरपातुर-फलोदी

Firm

M/s. SRI SUMAGALI JEWELLERS

63, Alannayam Road

TIRPATTUR-635601 (T.N.)

पाँचवे ने कहा परिवार से बात करने के लिए फोन एपल फोन चाहिये, छठे ने कहा सोने के लिए डनलप की गादी चाहिये, सातवे ने कहा रहने के लिए आलीशान बंगला चाहिये, 8 वे ने कहा मुझे जेल नही चाहिये, मैं आपसे पूछती सबसे उस्ताद और होशियार कौन? 8 वां न.? क्योंकि आठवे ने सोचा ये सारे सुख जेल से छुटते ही मिल जाएंगे। जेल ही बहुत बडा दुख है। बस मैने भी यही सोचां मुझे भी इस संसार की जेल से छूटना है।

जो क्षणिक है मुझे वो नही चाहिये, उसी परिणाम स्वरूप संयम साधना के 50 वर्ष निर्विघ्न एवं सुखद रहे।

मात्र 17 वर्ष की उम्र में संसार से नाता तोड लिया, परिवार से मुख मोड लिया, जिनशासन में आत्मा से नाता जोड लिया। सुशीला का जन्म सं. 1870, वि.सं. 2005 इस्वी सन् 13.5.1948 वैशाल शुक्ला 5 प.पू. चम्पाश्रीजी म.सा. के करक मलों से एवं पावन निश्राा में वि.सं. 2022 मिगसर सुदी 10 फलोदी में। बडी दीक्षा प्रज्ञा परूष प.पू. आचार्य श्री मज्जिनकांतिसागरसूरिश्वर जी म.सा. के कर कमलों से लोहावट में हुई।

संयम लेते ही जबर्दस्त अप्रमतता सिर्फ तप, त्याग, स्वाध्याय, और संयम निष्ठा में संपन्न बने। तीन वर्ष गहन अध्ययन-अध्यापन में रत रहे। वि.सं. 2026 इस्वी सन 1969 में गढ़ सिवाना निवासी भीखमचन्द जी विरदीचंदजी ललवानी पू. चम्पाश्रीजी म.सा. को चातुर्मास की विनंती करने पधारे, पू. आचार्य भगवन्त की आज्ञा से अपनी गुरूवर्या के साथ सिवाना पधारे। 18 वर्ष अपनी गुरू की निश्रा में संयम साधना की पश्चात् राजस्थान, गुजरात, कच्छ प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु कन्याकुमारी, तक के क्षेत्रों का सींचन करते अपनी 20 शिष्याओं सहित अनेक प्रकार के विविध अनुष्ठान, पद यात्राएँ, उद्यापन, जिमंदिर एवं दादावाडियों, उपाश्रयों के निर्माण की प्रेरणा स्त्रोत रही है। आपश्री ही प्रथम शिष्य पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. (भागु. म.सा.) हर एक कार्य में अग्रणी रही शासन प्रभावनाओं में।

कहते है- हिन्दी में स्वर्ण जयंति-अंग्रेजी में गोल्डन जुबली। खरतरगच्छ की चंपा वाटीका में पलने वाली तेरी तकदीर है खुली उस्ताद की रंगोली से मन आंगन सज गया, उमंग की सुवास से आत्म प्रदेश सुवासित बन गया।

आपका सरल सादा जीवन मिलन सरिता, स्वावलंबी जीवन अप्रमतता, शुद्धाचरण, अहिंसा व संयम के प्रति निष्ठा आप का प्राण है। हम शिष्य परिवार के लिए बहुत बडी सौगात है। हमारे लिए प्रेरणा की पगदंडी है। संयम दृढ़ता के लिए माईल स्टोन है। हम आपके प्रति गौखान्वित है।

संयम साधना के 50 वे वर्ष दिवस की हम आपके प्रति शुभकामना करते है

आपकी साधना मोक्ष का कारण बने आप चिरायु बनें, दीर्घायु बने, जिनसासन में मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा सूर्य की भांति उर्जावान बनें।

छाया मिले आपकी, सिर पर आपका हाथ हो
जीवन के हर मोड पर बस आपका साथ हो

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 50वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ
आकृति जिनकी है आनंद कारी, प्रकृति जिनकी स्नेहिल शाता कारी
संस्कृति जिनकी है पावनकारी प्रशंसाकारी
ऐसी गुरुवर्या सूर्यप्रभाश्री जी म.सा. के चरणों में आदरान्जली हमारी
श्रद्धावंत
ज्ञानाबाई-फतेहलाल जी गुलेच्छा के सुपुत्र
तिलोकचंद, हुकमचंद, गौतमचंद, प्रकाशचं, विजयकुमार
आनंद, प्रवीण, दीपेश, शांतिलाल, अजितकुमार,
जयजिनेन्द्र, पंकज, शैलेश, अरिहंत, मनन, कुशल, पार्थ
समस्त गुलेच्छा परिवार फलोदी-जयपुर-चैन्नई

मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यभाश्रीजी म.सा. की विहार यात्रा

मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा. का जीवन परिचय एवं चातुर्मास स्थल पिता ज्ञानचंद जी मालू माता तेजाबाई जन्म सं. 1870 वि.सं. 2005 ता 13.5. 1948 वैशाख शुक्ला 5, जन्म नाम कमला उर्फ नाम सुशीला दीक्षा वि.सं. 2022 मिगसर सुदी 10 फलोदी में- प.पू. चंपाश्रीजी म.सा. की निश्रा एवं कर कमलो से बडी दीक्षा वि.सं. 2024 वैशाख सुदी 3 लोहावट- आचार्य जिनकांतिसागरसूरिश्वर जी म.सा. के कर कमलों से हुई।

इस्वीसन	विक्रम सं	गाँव
1966	2023	फलोदी, राज.
1967	2024	फलोदी, राज.
1968	2025	फलोदी, राज.
1969	2026	सिवाना, राज.
1970	2027	मोकलसर, राज.
1971	2028	मिठुडा, राज.
1972	2029	सिवाना, राज.
1973	2030	सिवाना, राज.
1974	2031	मोकलसर, राज.
1975	2032	सिवाना, राज.
1976	2033	मोकलसर, राज.
1977	2034	सिवाना उमेदपुरा, राज.
1978	2035	सिवाना, राज.
1979	2036	समदडी, राज.
1980	2037	बालोतरा, राज.
1981	2038	सिवाना, राज.
1982	2039	सिवाना, राज.
1983	2040	सिवाना, राज.
1984	2041	बाड़मेर, राज.
1985	2042	सिवाना, राज.
1986	2043	समदडी, राज.
1987	2044	सिवाना पादरूवास राज.
1988	2045	सिवाना, राज.
1989	2046	पालीतान, गुज.
1990	2047	सूरत, गुज.
1991	2048	माडवी, गुज.
1992	2049	अंजार, गुज
1993	2050	सिवाना उमेदपुरा, राज.
1994	2051	बडौदा, गुज.
1995	2052	नंदुरबार, महा.
1996	2053	समदडी, राज.
1997	2054	फलोदी, राज.
1998	2055	सिवाना हनवंतपुरा, राज.
1999	2056	पालीताना, गुज.
2000	2057	सिवाना मिठुडावास, राज.
2001	2058	ब्यावर, राज.
2002	2059	इंदौर, मध्यप्रदेश
2003	2060	नंदुरबार, महा.
2004	2061	सोलापुर, महा.
2005	2062	हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश
2006	2063	होसपैट, कर्नाटक
2007	2064	इचलकरंजी, महा.
2008	2065	बैंगलोर, कर्नाटक
2009	2066	मद्रास चुलै, टी.एन
2010	2067	मधुरै, टी.एन
2011	2068	तिरपातुर, टी.एन
2012	2069	उटी, टी.एन
2013	2070	मद्रास धर्मनाथ, टी.एन
2014	2071	हुबली, कर्नाटक
2015	2072	होसपेट, कर्नाटक

पूज्याश्री का जालना नगर में प्रवेश

जिनकुशल सूरि नगरी का द्वार उद्घाटन

श्री पार्श्वनाथ भगवान के 10 भव

वामा माता का थाल

महाराष्ट्र प्रदेशे

श्री धर्मनाथ मंदिर दादावाड़ी के परम

समतामुर्ति प.पू. साध्वी श्री प्रियरश्मि

श्री प्रियलताश्रीजी म.सा., कोकिल

का १०० वर्ष पश्चात् प्रथम बार

आपका

जैन श्वेताम्बर मूर्तिपू

श्री जैन श्वेताम्बर कुशल

जवाहर बाग, SBI बैक के पास,
देवलगांव राजा रोड़, पेट्रोल पम्प,
जालना-४३१२०३

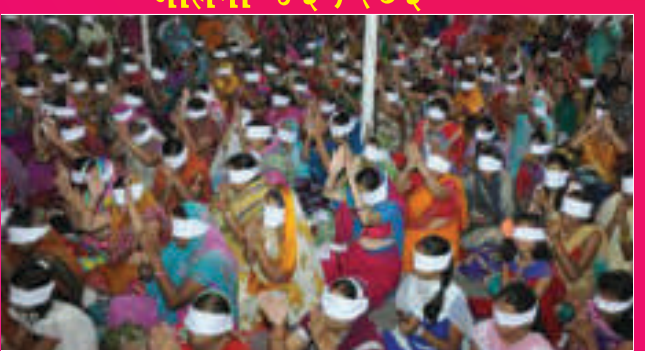

श्री सीमंधर स्वामी की भाव यात्रा

जालना नगरे

पवित्र प्रांगण 'जिन कुशल नगरी' में

मताश्रीजी म.सा., मधुर व्याख्यानी

ा कंठी श्री प्रियवंदनाश्रीजी म.सा.

आदि ठाणा ६

ऐतिहासिक चातुर्मास होने पर

्जक श्रीसंघ जालना

ा गुरु मंदिर (दादावाड़ी)

सम्पर्क सूत्र :

सुरेशजी मुथा (अध्यक्ष) 09423156402,

महावीर डुंगरवाल (सह सचिव) 09404517442

माँ सरस्वती रंगोली

चारों दादा गुरुदेव व आचार्य/गणाधीशजी की फोटो का विमोचन

श्री नेमिनाथ भगवान पंचकल्याणक

फलों से भी अधिक खुशबुदार

जीवन बने आपका

फलों से भी अधिक मधूर

जीवन बने आपका

अभिनंदन की वेला पर

आपको वंदन

सूरज से भी तेजस्वी

जीवन बने आपका

प. पू. मारवाड़ ज्योति

श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 50वें

संयम दिवस पर

हार्दिक बधाईयाँ

श्रद्धावंत

जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, सोलापुर

43/46, जोडभावी पेट, सोलापुर-413002

सम्पर्क सूत्र : 2327420

समाचार दर्शन

रायपुर में ज्ञान गंगा बही

पू. गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के सानिध्य तत्त्वज्ञान का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

वैराग्य शतक के अन्तर्गत वैराग्य को पुष्ट करनी वाली गाथाओं का स्वाध्याय किया गया। जैन जीवन शैली में जैन आहार, जैन आचार, जैन जाप, जैन भोजन, जैन कर्म, जैन क्रिया, जैन आराधना का शिक्षण-प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम कर्मग्रन्थ में आठ कर्मो का स्वाध्याय किया गया। आठ कर्म, बंध-कारण, निर्जरा उपाय आदि का ज्ञान दिया गया।

इसके बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कर्मग्रन्थ के चौदह स्थानकों का विवेचन किया गया। सम्यक्त्व प्राप्ति की प्रक्रिया में यथा प्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, त्रिपुंजकरण आदि की विवेचना में अदभुत आनंद आया। बंध, बंधविच्छेद् अबंध में प्रकृतियों का कण्ठस्थीकरण में सामूहिक उच्चारण एक अलौकिक उष्मा का संचार करता।

इसके बाद खरतरगच्छ गौरव गाथा पर विविध परीक्षाएँ हुई जिसमें चार परिक्षाओं के कुल प्राप्तांक में प्रथम स्थान माना चतुर मुथा-खरियाररोड़, द्वितीय स्थान कीर्ति मालू-खरियाररोड़, तृतीय स्थान सरिता भंसाली-रायपुर ने प्राप्त किया।

इसके बाद हुई तत्त्वज्ञान प्रश्न पत्र में प्रथम स्थान कीर्ति मालू ने प्राप्त किया। चार महिने तक निराबाध चली कक्षा के विद्यार्थीयों अन्तिम दिवस विदाई देते हुए कृतज्ञता अभिव्यक्त की। श्वेता भंसाली, सीमा भंसाली, सुजाता जी, रोशनी, चन्द्राबाई भंसाली, माना चतुरमुथा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कीर्ति मालू, दीपिका कवाड़, तरूण लोढ़ा, ज्योति सर्राफ, रजनी गोलछा, जयंती भंसाली, माना चतुरमुथा आदि ने गीतिका प्रस्तुति की। सभी की आँखें जुदाई-विदाई के गम में भीगी हुई थी।

पू. मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- आप सभी का भरपूर स्नेह और श्रद्धा भाव प्राप्त हुआ। मेरे अनुशासन को स्नेह के रूप में देखा। इस जीवन में सदैव सुपात्र बनकर स्वाध्याय में वृद्धि करना कोशिश करना।

इस प्रकार चातुर्मासिक तत्त्वज्ञान क्लास का एक सुखद सफल परिणाम मिला।

उपधान में मासक्षमण

रायपुर में संपन्न हो रहे परम पूज्य गणाधीश प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी मंडल की निश्रा में गतिशील उपधान तप ने एक विशिष्ट अनूठा और ऐतिहासिक रिकार्ड़ कायम किया है। इछ गढ़ के इतिहास में... खरतरगच्छ के इतिहास में तपस्या का अनूठा दस्तावेज लिखा है सुश्राविका अ. सौ सुशीला बहिन निमाणी ने। उन्होंने उपधान का प्रारंभ तो बीस की भावना से ही किया था परंतु गुरूजनों के तपोमय सत्संग ने उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रारंभ में उन्होंने 10 दिन तक तो उपवास निवियाता ही किया पर संभवत: कोई अद्वश्य सत्ता का संकेत हुआ अथवा उनके प्रबल तप कर्म का उदय हुआ कि उन्होंने लगातार उपवास तप की आराधना शुरू कर दी..।

पूज्य उपाध्याय श्री एवं मुझे हल्का सा संकेत मिला कि इनके मासक्षमण की भावना है। सुना तो आश्चर्य हुआ। उपधान में मासक्षमण की कल्पना भी कठिन लगती है। उपधान में जितना तप होता है उससे कही ज्यादा तो वहाँ क्रिया होती है। सुबह तीन बजे से क्रिया शुरू होती है जो रात्रि को दस बजे तक चलती है। उन सब क्रियाओं को करते हुए तप

प. पू. दिक्षा स्वर्णजयंती पर अतिशय वन्दन अनंतश अभिनंदन

श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

चरण शतपत्रों में
वन्दन शतबर...
अभिनंदन सहस्तबार
दिक्षा स्वर्ण जयन्ति की
पुनित सुरम्य वेला में
हार्दिक शुभकामना अन्तरमन से...

50वें
संयम दिवस पर
हार्दिक बधाईयाँ

NAKODA AUTO FINANCE

H.O. : MahatmaGandhi Mard,
KHETIYA Dist. BADVANI (M.P.)
B.O. : **SAHADA** Dist. NANDURBAR (MAH.)

Vijaykumar
09424055911
(07286-232311)

Nitien Lunavat
09422792711

Sachien Lunavat
094073 31111

R. K. JEWELERS
MahatmaGandhi Mard,
KHETIYA
Dist. Badvani (M.P.)
Santilal - Nilesh Lunavat
07286-233511, 09424055919

GANESH JEWELERS
MahatmaGandhi Mard,
KHETIYA
Dist. Badvani (M.P.)
Kantilal
Dipesh, Ganesh Lunavat
07286-233441, 09424055920,
09406608866

करना कठिन ही नही, अति कठिन है

फिर भी श्रद्धा निष्ठा सुशीलादेवी की तपस्या निरंतर बढ़ती रही। जब भी उन्हें देखते उर्जा से परिपूर्ण आराधना करते हुए, ऐसा लगता था जैसे शासनमाता का उन्हें पूर्ण अनुग्रह प्राप्त हुआ है।

आखिर वह दिन आ ही गया, जब उनके संकल्प के पूर्णता मिली।

उनके तप का अभिनंदन बहुमान करते हुए पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. ने कहा- आज तक प्रत्येक चातुर्मास में यथासंभव यथारूचि आराधना होती है। मासक्षमण, सिद्धितप जैसी उग्र तपश्चर्या भी हुई है, पर मासक्षमण, वह भी कार्तिक मास में उपधान करते हुए करना मेरे लिए भी अत्यंत विस्मय जनक है। मैंने आज तक उपधान तप के साथ मासक्षमण की तपस्या न देखी है, न सुनी है। रायपुर का यह उपधान मेरे लिए सदा के लिए यादगार आयोजन बन गया है।

सबसे बड़ी बात सुशीला बाई को जब भी देखो, चेहरे पर वही प्रसन्नता... चेहरे पर वही समाधि, वही क्रिया में सजगता बहुत बड़ी उपलब्धि है। आपने अपना आत्मकल्याण तो किया ही है। साथ ही संघ का शासन का एवं इस उपधान का गौरव भी बढ़ाया है।

संघ की ओर से सोने की चैन एवं उपधान तप के मुख्य लाभार्थी श्री नरेन्द्र कुमार जी संध्यादेवी पारख परिवार ने सोने के सिक्के द्वारा बहुमान किया।

पूरे वातावरण में चारो ओर मासक्षमण की तपस्विनी बहन की ही चर्चा थी।

खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा विहार व्यवस्था का प्रशंशनीय कार्य

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की विभिन्न साखाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य साधु साध्वी विहार व्यवस्था की जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहे हैं।

देश भर से मिले समाचार के अनुसार साखा पदाधिकारियों ने साधू साध्वियों से व्यक्तिगत संपर्क साधकर उनके विहार संबन्धी जानकारी एवं व्यवस्था के लिए विनती की है। और जिन साधू साध्वी भगवन्तो ने विहार आरम्भ कर दिया है उनके साथ युवा परिषद् के सदस्य विहार में मौजूद रहते हुए कार्यक्रम एवं व्यवस्था सुचारू रूप से कर रहे हैं।

चेन्नई में जहाँ भीषण बारिश हो रही है और साध्वीजी के पास समय की कमी के कारण उग्र विहार करना पड़ रहा है वहां पर युवाओं ने सराहनीय व्यवस्था व सहयोग किया है।

बालोतरा, बाड़मेर व भीलवाड़ा साखा के पदाधिकारियों ने राजस्थान में विराजित सभी साधु साध्वियों से व्यक्तिगत संपर्क एवं विनती की है। बेंगलोर साखा द्वारा कर्नाटक में विराजित सभी साध्वियों के विहार कार्यक्रम का आयोजन पूर्ण समर्पण एवं व्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है।

रायपुर, दुर्ग धमतरी एवं महासमुंद की शाखाऐं छत्तीसगढ़ में विराजित साधु साध्वी भगवन्तो के विहार कार्यक्रम में अति उत्साह से जुडी हुई है।

मुम्बई और इचलकरंजी के पदाधिकारियों ने पुणे, मुम्बई और शोलापुर विराजित साध्वी भगवन्तो से मिलकर एवं दिल्ली शाखा के सदस्यों ने दिल्ली, महरौली एवं आगरा में विराजित साध्वियों से मिलकर विहार संबन्धी विनती एवं कार्यक्रम हेतु विचार विमर्श किया।

युवा परिषद् द्वारा इस देश व्यापी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभाने का उनका यह प्रयास अनुमोदनीय है। युवा साखाओं से निवेदन है कि इस कार्य में और अधिक सदस्यों को जोड़ने का प्रयास जारी रखें। और कहीं भी अगर कोई व्यवस्था की जरूरत की जानकारी मिले तो आप युवा परिषद् के सदस्यों को अवश्य सूचना करें।

पदम कुमार टाटिया, महामंत्री- सम्मेलन आयोजन समिति

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के संयम स्वर्ण समारोह पर
हार्दिक बधाईयाँ
महावीर की कॉलेज में आपको मिल गया एडमीशन
50 वर्ष संयम जीवन जीकर, जीवन का किया कलेक्शन,
50 वर्ष तक दिया आपने तन मन का डोनेशन
परमात्मा के साथ तूने जोड़ा है कनेक्शन
गोल्डन जुबली पर हम देते है कॉंग्रॅच्युलेशन...
DIPESH COLLECTION
Near Ganpati Mandir,
NANDURBAR (Mah.)
हेमंतकुमार, नरेन्द्रकुमार, नवीन, मनोज बेदमुथा
इन्दरमलजी मांगीलालजी डागा
विक्रांतकुमार, एडवोकेट विकासकुमार डागा
विनम्र-दिव्य-देवांस डागा
303, व्यंकटेश नगर, ऐअरपोर्ट रोड़, इन्दोर (मध्यप्रदेश)
तिलोकचंद नेमीचंद लुंकड़
पुष्पादेवी तिलोकचंद लुंकड़
नहटा रोड़, फलोदी (राज.)

मोक्षमाला का ऐतिहासिक कार्यक्रम संपन्न

रायपुर स्थित ऋषभदेव मंदिर एव दादावाड़ी की लबे समय से दादावाड़ी में उपधान तप आयोजित कराने की भावना थी इस वर्ष जब गच्छाधिपति गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. आदि संघ चातुर्मास तय हुआ तो पुन: इस भावना ने जोर पकड़ा।

चातुर्मास में पूज्य गुरूदेव श्री ने पूरी गहराई से दादावाड़ी परिसर का निरिक्षण कर दादावाड़ी परिसर में उपधान तप हेतु ट्रस्ट मंडल की विनंति स्वीकार कर के स्वीकृति प्रदान की।

उपधान तप के मुख्य सहयोगी बने श्री नरेन्द्र कुमार जी संध्यादेवी पारख परिवार। उपधान तप का प्रारंभ आसोज बदी 12 को हुआ। इस उपधान को तपस्वी आराधकों ने नित नए आयामों द्वारा अनूठा बनाया। तप-जप एवं स्वाध्याय की त्रिवेणी में आराधक समूह नहाकर पावन होता जा रहा था।

इसी उपधान तप में मासक्षमण की 10, 9 एवं 5 उपवास की भी आराधना हुई।

27 नवंबर से उपधान तप की मोक्षमाला के अवसर पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

27 नवंबर को प्रात: 9 बजे 68 नवकार मंत्र का अनुष्ठान हुआ। नवकार मंत्र के अनुष्ठान का श्रवण कर जनता श्रद्धा से भर उठी।

रात्रि को भक्ति सहित आगम वंदना का कार्यक्रम था। स्मरण रहे इस बार चातुर्मास में पूज्य गुरूदेव श्री ने 45 आगमो की अद्‌भुत प्रवचन माला आयोजित की थी।

28 नम्वबर को मोक्ष माला का वरघोड़ा था। वरघोड़े की तैयारी में पूरा ट्रस्ट मंडल एवं चातुर्मास समिति और उनके मार्गदर्शन में समर्पित युवाओं की टीम तत्पर भी थी।

प्रात: 8 बजे सदर बाजार से वरघोड़ा प्रारंभ हुआ। विशाल वरघोड़े में तप से कृशकाय पर कर्मों के भार से हल्के हुए तपस्वियों के समूह को निहारकर जनता की आँखे धन्य हो उठी।

वरघोड़ा नियत: समय पर दादावाड़ी पहुँचा उपधान तप के मुख्य लाभार्थी पारख परिवार ने परमात्मा गुरूदेव एवं पद्मावती माँ को आभूषण चढ़ाये।

सभामंडप में आज उपकरण वंदनावली का कार्यक्रम था। पूज्य उपाध्याय श्री का प्रारंभ में प्रवचन हुआ। उसके बाद पूज्य मनितप्रभजी म.सा. द्वारा संयम का भाव पूर्ण अनेकों उदाहरण द्वारा महत्व समझाया गया।

संगीतकार श्री रूपेश भाई वोरा मुंबई ने भावपूर्ण हृदय से चारित्र के उपकरणों की महिमा संगीत के साथ प्रस्तुत की।

उपकरणों के चढावे, तपस्या, माला, व्रत एवं स्वाध्याय में बोले गऐ। रिकार्ड चढ़ावे हुए।

आज स्वधर्मी भक्ति के लाभार्थी एवं चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी एवं चातुर्मास के स्तंभो का स्वागत समिति द्वारा बहुमान किया गया।

दोपहर में दादा गुरूदेव की पूजा पढ़ाई गयी।

रात्रि में उपधान तप के तपस्वियों की वंदना एवं सामूहिक आरती का भव्य आयोजन हुआ।

।। श्री शान्तिनाथाय नमः ।। ।। श्री आदिनाथाय नमः ।। ।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुदेव जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ।। ।। श्री चम्पाश्री जितेन्द्रश्री गुरुवर्यायै नमः ।।

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति उपाध्याय भगवंत मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञांकिता

परम पूज्या मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रीजी मसा.

के संयमजीवन के 50 वर्ष के अनुमोदनार्थ

अनुमोदन अभिनंदन भाव पुष्प

हे शांत स्वभावी गुरुवर्या !

आपका जन्म वि. सं. 2005 को रत्नभूमि फलोदी नगर की धन्य धरा पर पिताश्री ज्ञानचंदजी मातुश्री तेजाबाई मालू की रत्नकुक्षी से हुआ। धार्मिक संस्कारों से सवासित घर पर जन्म मिला। माता पिता के वात्सल्य से सुसंस्कार का बीजारोपण हुआ। तत्पश्चात् गुरुवर्याश्री पू. चम्पाश्रीजी म.सा. की निश्रा मिली, वैराग्य पुष्ट हुआ। आप संयम का श्रृंगार सजकर भौतिक रंगराग को तिलांजली देकर वि.सं. 2022 को फलोदी नगर में भगवान महावीर के पथ की पथिका बनकर संयम स्वीकार किया। वास्तव में आपका त्याग आपका संयम अनुमोदनीय है।

हे सरल मना पूज्याश्री !

आपने संयम जीवन में प्रवेश करते ही गुर्वाज्ञा को जीवन का मंत्र बनाया। आपका एक ही लक्ष्य रहा मर्यादा मेरी शान हो, संयम मेरा श्वास हो, स्वाध्याय मेरा नयन हो ध्यान मेरा बल हो, साधुतव मेरा जीवन हो, और आराधना मेरा सर्वस्व हो। नमनीय है आपका यह लक्ष्य ।

हे समता मूर्ति गुरुवर्या !

आज सोलापुर नगर की धन्य धरा पर आपके संयम जीवन के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, इससे संघ गौरवान्वित है। आज की घड़िया आज के पल, आज का सूरज निसंदेह अलौकिक है। आपकी संयम यात्रा को बधाने समस्त संघ ही नहीं बल्कि संपूर्ण प्रकृति हाथों में भाव पुष्प लिखे खडी है।

आपका संयम जिनशासन के लिए वरदान बना है, आपकी गौरवमयी संयम यात्रा निष्कंटक और निर्विघ्न से गतिशिल हो। आपका जीवन दिन प्रतिदिन साधना के प्रशस्त पथपर उत्कर्ष व प्रगति करता जाय यही अन्तर भावना !!

बधाई सह कोटि-कोटि मंगल कामनाएं ।

खिलती हुई कलियां खुश्बू दे आपको।
उगता हुआ सूरज रोशनी दे आपको।।
हमतो कुछ दे नहीं सकते आपको।
देने वाला हजार वर्ष की संयम यात्रा दे आपको।।

मिगर सुद 10 रविवार ता. 20-12-2015

विनीत

श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, सोलापुर

34/46, जोडभावी पेठ, सोलापुर

आज का सुर्योदय तपस्वियों के लिए अनूठा था आज उनके तप रूपी शिखर ध्वजा फहराने वाली थी। आज उन्हें गुरूदेव द्वारा अभिमंत्रित अनमोल मोक्षमाला प्राप्त होने वाली थी। उन्होंने इस दिन को बधाने के लिए तप, जप, एवं स्वाध्याय की आराधना की थी।

सूर्योदय से ही मंदिर में उपधान तप के तपस्वी पूजा के लिए पहुंच रहे थे।

पूज्य उपाध्याय गणाधीश भगवंत ने मालारोपण क्रिया करवाते हुए कहा- जिनशासन के सभी कार्यो का प्रारंभ परमात्मा की भक्ति से ही होते है। हमने इतना विशिष्ट तप किया इसमें परमात्मा की ही कृपा है। बिना परमात्मा की कृपा के न हम श्रावक जीवन पा सकते थे और न उपधान तप की आराधना की अनुकूलता। अन्य मालाएं संसार बढ़ाती है, राग द्वेष और कषायों का वातावरण तैयार करती हैं परंतु यह मोक्षमाला संसार के बंधनों को काटती है। इसी कारण इस मोक्षमाल का परिधान भी परमात्मा की साक्षी से होता है।

पूजनीय बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. ने कहा आज तीन प्रसंगो का उल्लेख मुझे करना है। कल सूर्योदय के बाद हमारा इस दादावाड़ी परिसर से प्रस्थान, उपधान तप के आराधको की अनुभोदना एवं अहमदाबाद से पधारे प. जितेन्द्र भाई बी. शाह आराधक व्यक्तित्व का परिचय।

छत्तीसगढ आने से पूर्व मेरा परिचय किसी से न था। आने से पूर्व अनेकों आशंकाएं थी। पू. उपाध्याय श्री गणाधीशजी म. के आदेश से मैंने इस क्षेत्र में छः माह पूर्व प्रवेश किया परंतु मुझे 36 गढ के संघ से जैसा अपनत्व स्नेह सद्भाव प्राप्त हुआ मेरे जीवन की वह बहुत बड़ी पुंजी है।

जीतेन्द्र भाई लगभग तीन दशक से मुझसे अत्यंत गहरे सद्भावों से जुड़े हुए है। उनका पवित्र, निर्दोष, निश्छल व्यक्तित्व ज्यों-ज्यों मैंने जाना मैं प्रभावित होती गयी। उनकी अनासक्ति, गंभीरता एवं समता मेरा आदर्श है। उनकी संपूर्ण नियंत्रित आचार पद्धति मेरे हृदय में सदैव अहोभाव उत्पन्न करती है। उनके जीवन की ज्ञान साधना अनूठी है। उनका जीवन मात्र ज्ञान समर्पित है।

पं. जीतूभाई ने अपने अभिनंदन के उत्तर में कहा- मुझे पूज्य गणाधीश भगवंत का एवं बहिन म. का लंबे समय से निःस्वार्थ प्रेम प्राप्त हुआ है। जब भी मिलता हूँ एक नयी ताजगी प्राप्त होती है। मुहूर्त आते ही पूज्य गच्छाधिपति गुरूदेव श्री ने प्रथम माला के तपस्वियों को माला मंच पर बुलाया। क्या वह अनूठा दृश्य... क्या अद्भुत परिजनों की उमंग... तपस्वियों की प्रसन्नता तो उनकी रग-रग से नितर रही थी। क्रमशः उपधान के सभी तपस्वियों को उनके परिजन अपने हाथों में उठाकर परमात्मा की प्रदक्षिणा देते हुए मंच पर लेकर आते गये और गुरूदेव सभी को अभिमंत्रित माला देते रहे।

चार घंटे चले इस अद्भुत कार्यक्रम में सभी तपस्वियों को मुनिसुव्रत दादा की प्रतिमा भेंट करने का लाभ लिया अ. सौ. ज्योत्सना बेन अनिल भाई घेलाणी परिवार ने। इस अवसर पर रायपुर के महापौर श्री प्रमोद दुबे, रायपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री संजय श्री वास्तव एवं जैन दर्शन के परम विद्वान श्री ज्योतिभाई कोठारी का अभिनंदन किया गया। इस साल महोत्सव के कार्यक्रम को देखने के लिए पूरा 36 गढ उमड पडा था। उपधान तप के मुख्य लाभार्थी श्री नरेन्द्र कुमार जी ने कहा- हमारा सौभाग्य है कि हमें इतने बड़े तप की आराधना में सहयोगी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ट्रस्ट मंडल की ओर से सभी तपस्वियों का स्वर्ण मुद्रा से नरेन्द्रकुमार जी ने अभिनंदन किया। ट्रस्ट एवं समिति की ओर से तीनों दिन की सुंदर नवकारसी की व्यवस्था थी। तीनों दिन भक्ति कार्यक्रम हेतु मुम्बई से श्री रूपेश वोरा पधारे थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा पधारे थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय खरतरच्छ युवा परिषद की वेबसाइट लॉन्च की गयी। इसका लाभ ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट, रायपुर ने लिया।

पद्मावती महापूजन संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि की पावन निश्रा में न्यू राजेन्द्रनगर रायपुर में श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर में खिंचन निवासी परम गुरुभक्त श्री गौतमचंदजी सौ. मीना देवी पुत्र सुलभ सौरभ कोठारी परिवार की ओर से ता. 22 नवम्बर 2015 को पद्मावती महापूजन पढाया गया।

पूज्यश्री 5 किलोमीटर का विहार कर बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. के साथ जिन मंदिर पधारे, जहाँ पर वर्धमाननगर संघ की ओर से भव्य स्वागत किया गया। महापूजन के पश्चात् स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

बरडिया परिवार में आगमन

इस चातुर्मास की यह विशिष्टता रही कि चारों माह मासक्षमण की आराधना चलती रही।

श्रीमति मदनाबाई जसराजजी बरड़िया परिवार की विनंती को स्वीकार करके पूज्य गुरूदेव गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं परम पूज्या गुरूवर्या बहिन म.श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. दादावाड़ी से प्रस्थान कर उनके गृहांगण पर पधारे।

बरड़िया परिवार अपने गृहांगण में चर्तुविध संघ को पाकर जैसे धन्य हो उठा। गुरूदेव एवं साध्वीजी भगवंत को बधाकर विशिष्ट रूप से बनाई रौप्यमुद्रा की प्रभावना की।

नवकारसी के तुरंत बाद व्याख्यान का आयोजन था। आगंतुक लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी। बरड़िया परिवार ने प्रवचन मंडण का भव्य शामियाना लगाया।

पूज्य गुरूदेव श्री ने प्रवचन देते हुए फरमाया- हृदय का विस्तार धर्म है। संबंधों का दायरा जितना विस्तृत होगा उतना ही अधिक हमारा जीवन धर्ममय होगा। अपनत्व बढ़ते ही हमारी दृष्टि बदल जाती है। अभी हमारा जीवन स्वकेंद्रित हैं। उसका सामान्य विस्तार स्वजन केन्द्रित उससे आगे बढ़ता हैं तो समाज केंद्रित होता है पर इनके साथ संबंध बनाने में भी मुख्यता तो स्वयं की ही रहती हैं।

स्वयं के विचारो को उदार बनाना और दोषों पर दृष्टि रखने की अपेक्षा गुणों पर दृष्टि रखें

परम पूज्या बहिन म.सा. ने कहा इस परिवार में आकर मेरी प्रसन्नता कुछ विशेष बढी हैं। बंधुत्रय की दादीजी मेरी गुरूवर्या श्री की भतीजी थी। अपनी गुरूवर्या श्री की पारिवारिक होने से मेरे हृदय में उनके प्रति सहज सम्मान भी हैं।

अपने उपकारी गुरूजनों के संबंधों के प्रति सहज सम्मान परिवारवाद नहीं, बल्कि उपकारी भावों का स्मरण हैं। उन्होंने इस संबंध में ऐतिहासिक उदाहरण भी दिये।

अपने आंगन में चतुर्विध संघ का अभिनंदन करते उदारमना सेठ श्री त्रिलोकचंदजी ने कहा- गुरूदेव का जब चातुर्मास तय हुआ था उस दिन से माताजी सहित पूरे परिवार की मानसिकता थी कि हम अपने घर पर गुरूदेव के पदार्पण का आयोजन करेंगे।

पूरे चातुर्मास तक इतंजार करते आखिरकर आज हमें निश्रा प्राप्त हुई। गुरूदेव एवं गुरूवर्या श्री ने हमें चातुर्मास की

अवधि में भरपूर आशीर्वाद दिया। सकल संघ ने हमारे निमंत्रण को स्वीकार करके यहाँ पधारा उसके लिये हम आपके बहुत आभारी हैं। आप सभी का वैसा ही आशीर्वाद हम पर बरसे ऐसी हम कामना करते हैं। हमारे पारिवारीक मित्र मंत्रीप्रवर श्री बृजमोहन जी अग्रवाल पधारे हम उनके भी आभारी हैं। श्री त्रिलोकचंदजी ने गुरूजनों के आगमन के उपलब्ध में घोषणा की कि हमारा परिवार प्रतिमाह एक साधर्मिक व्यक्ति को लखपति बनायेगा। उनकी घोषणा सुनकर उपस्थित सारा समाज अहोभाव से भर उठा। लंबे समय तक तालियाँ बजती रही।

बरडिया परिवार ने उपस्थित संघ प्रमुख सहित श्री बृजमोहनजी अग्रवाल का तिलक, माला, श्रीफल एवं शॉल सहित बहुमान किया।

सेवाभावी श्री मुकेश प्रजापत का स्वर्णश्रृंखला से एवं अन्य सभी गुरूदेव की सेवा में रह रहे बच्चों का अभिनंदन किया गया।

रायपुर के उपनगरों में परिभ्रमण

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल का रायपुर के उपनगरों में प्रवचन आदि के कार्यक्रम रखे गये।

ता. 19 व 20 नवम्बर को विवेकानन्द नगर में दो दिवसीय प्रवचनमाला का आयोजन किया गया। जिसमें बडी संख्या में श्रावक उपस्थित रहे।

ता. 21 को पूज्यश्री विहार कर न्यू वर्धमान नगर, राजेन्द्र नगर पधारे, जहाँ परम गुरु भक्त श्री गौतमचंदजी कोठारी परिवार की ओर से श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन का आयोजन किया गया। महापूजन के पश्चात् साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन किया गया।

ता. 22 को पूज्यश्री का पदार्पण श्री ऋषभदेव जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री तिलोकचंदजी बरडिया के निवास स्थान पर हुआ। वहीं प्रवचन संपन्न हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ सरकार के मंत्री श्री अग्रवाल उपस्थित रहे।

ता. 23 को पूज्यश्री गुढियारी पधारे, जहाँ समता भवन में उनका प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

महासमुन्द में पुण्यतिथि मनाई गई

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 30वीं पुण्यतिथि का आयोजन छत्तीसगढ के महासमुन्द नगर में पूज्य गुरुदेवश्री के शिष्य रत्न पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की निश्रा में मिगसर वदि 7 ता. 2 दिसम्बर 2016 को मनाई गई।

रायपुर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर पूज्यश्री विहार करते हुए आज महासमुन्द पधारे। जहाँ श्री संघ द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। पूरे मार्ग को बैनरों से सजाया गया था। स्थान स्थान पर गहुँलिया की गई। नगरपालिका अध्यक्ष श्री पवनजी पटेल व सभापति श्री देवीचंदजी राठी द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। स्थानीय विधायक श्री विमलजी चौपडा ने पूज्यश्री का अभिनंदन किया।

मंदिर दादावाडी के दर्शन उपरान्त गुणानुवाद सभा प्रारंभ हुई। गुणानुवाद सभा में पू. साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी म., पूर्व अध्यक्ष श्री भीखमचंदजी मालू, विधायक श्री विमलजी चौपडा ने पूज्यश्री के व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा करते हुए संस्मरण सुनाये। इस अवसर पर प्रसिद्ध संगीतकार श्री देवराजजी लूणिया, सौ. श्रीमती प्रियंकादेवी चौपडा ने गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। इस अवसर पर पूज्यश्री ने प्रवचन फरमाते हुए कहा- पूज्यश्री का व्यक्तित्व विराट् व अनूठा था। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह उनकी कृपा से ही हूँ। उन्होंने अपने बचपन से जुडे कई प्रसंग सुनाये। उन्होंने कहा- आज प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. की छठी पुण्यतिथि भी है। उन्होंने गुरु महाराज का दिन लिया। पूज्यश्री ने उनसे जुडे कई प्रसंग सुनाये। सभा का संचालन संघ के महामंत्रे श्री पारसमलजी चौपडा ने किया। रायपुर केयुप के अध्यक्ष श्री सुरेशजी भंसाली ने सकल श्री संघ को पालीताना सम्मेलन में पधारने का आग्रह किया।

जयपुर में 63 दिवसीय महापूजन

पूज्य आचार्य देव खरतरगच्छाधिपति श्री जिनउदयसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गणिवर्य दीर्घ तपस्वी श्री पूर्णानंदसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में जयपुर नगर में श्री मोतीडुंगरी रोड दादावाडी में श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर के तत्वावधान में 63 दिवसीय श्री ऋषिमंडल संपुट अभिषेक महापूजन का आयोजन किया गया। इस महापूजन का प्रारंभ ता. 21 सितम्बर से हुआ था। इसकी पूर्णाहुति ता. 23.11.15 को संपन्न हुई।

इस बीच ता. 16 नवम्बर को पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनउदयसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 20वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा के साथ दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

तीन मुनियों के योग संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ने उत्तराध्ययन सूत्र के कालिक योग का विधान कार्तिक पूर्णिमा के दिन संपन्न हुआ। 28 दिनों तक चली उनकी योगोद्वहन साधना आयंबिल तप विधान के साथ संपन्न हुई। ता. 25 नवम्बर को अनुज्ञा नंदी की विधि करवाई गई। सकल श्री संघ ने उन्हें बधाते हुए योगोद्वहन पूर्णता की बधाई दी। ता. 26 नवम्बर को उनका पारणा संपन्न हुआ।

हरिविहार में ध्वजारोहण संपन्न

विश्व विख्यात श्री पालीताणा तीर्थ स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला के श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित मयूर मंदिर का 13वां वार्षिक ध्वजारोहण का कार्यक्रम दि. 24 नवंबर 2015 को आनन्द व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी जैन परिवार द्वारा जिन मंदिर पर ध्वजा चढाई गई। प्रातः अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। सतरह भेदी पूजा पढाई गई। यह समारोह पूज्य मुनिवर श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. सा. प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, कोषाध्यक्ष मेहता पुखराजजी तातेड, संघवी माणकचंदजी ललवाणी आदि ट्रस्टी उपस्थित थे। साथ ही जवेरीलालजी बच्छावत फलोदी, पीयुषभाई भावसार वडोदरा, कस्तुरचंदजी कोचर चैन्नई, सुरेशजी डोसी इन्दौर, मांगीलालजी बरडिया वाण्याविहीर, प्रदीपजी कांकरिया गढसिवाणा, मनसुखजी पारख बाडमेर, रमेशजी बोहरा अहमदाबाद, जेठमलजी छाजेड बाडमेर, महावीर छाजेड सहित अनेक प्रभुभक्त उपस्थित थे । अभिषेक विधिविधान पंडित भावेश भाई ने करवाया व संगीतकार संजयभाई ने प्रभुभक्ति का रंग जमाया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 2059 कार्तिक सुदि 13 को पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के निर्देशन में संपन्न हुई थी।

सकल खरतरगच्छ श्री संघ से निवेदन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आदेशानुसार पालीताना में खरतरगच्छ महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह सम्मेलन ता. 1 मार्च 2016 से 12 मार्च 2016 तक होगा। इसमें त्रिदिवसीय खरतरगच्छ श्रावक श्राविका सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमें कुल मिलाकर 7 सत्र होंगे।

श्रावक उद्‌बोधन सत्र में अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिये सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण है। निर्णय किया गया है कि जिसे भी अपने विचार सम्मेलन में प्रस्तुत करने हों, उनका नाम स्थानीय संघ द्वारा प्रस्तावित होना अनिवार्य है। आयोजन समिति के पास श्री संघ के लेटर पेड पर अधिकृत पदाधिकारी के हस्ताक्षर युक्त लिखित पत्र प्राप्त होने पर वक्तव्य हेतु उनका नाम वक्ताओं की सूची में अंकित किया जायेगा।

इस पत्र के आने के साथ वक्ता द्वारा दिये जाने वाले वक्तव्य का सार स्वरूप भी लिखित में आना अनिवार्य होगा। सकल खरतरगच्छ संघों से निवेदन है कि वे अवश्य ही अपनी ओर से विचार व्यक्त करने हेतु वक्ता का नाम प्रस्तावित करें।

पत्र व्यवहार इस पते पर करें-

श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन समिति

श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड

पो. पालीताना- 364270 गुजरात

mail- sammelan2016@gmail.com

पूज्य आचार्यश्री की पुण्यतिथि स्थान स्थान पर मनाई गई

0 पूज्य आचार्य श्री की समाधि भूमि जहाज मंदिर में पूज्यश्री की पुण्यतिथि मनाई गई। श्री गुरु पद पूजन पढाया गया। स्वामिवात्सल्य एवं गुणानुवाद का आयोजन किया गया।

0 बीकानेर में पूज्य आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में धूमधाम से मनाई गई।

0 पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी आदि साध्वीजी म. की निश्रा में पालीताना श्री जिन हरि विहार में पूज्य आचार्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई।

0 रायपुर में पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 30 वीं पुण्यतिथि पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मलयप्रभसागरजी म. की निश्रा में विवेकानंदनगर में मनाई गई। गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

0 सोलापुर में पूजनीया गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. प्रीतियशाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यश्री की पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा सहित कई आयोजन किये गये।

0 बाडमेर नगर में उपकारी गुरुदेव की पुण्यतिथि का आयोजन पू. तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में मनाई गई। विशाल गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

0 नीमच में पू. गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में पूज्य श्री की पुण्यतिथि का आयोजन पूजा आदि विधानों के साथ किया गया।

विदाई समारोह

होस्पेट पार्श्वपद्मावती आराधना भवन एम. जे. नगर में स्थित प.पू. मारवाड़ ज्योति श्री सूर्याप्रभाश्री जी म.सा. स्नेह सुरभि पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 10 का विदाई समारोह दर्द भरे आँसूओं से मनाया गया।

साध्वी सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा. ने सभा से चातुर्मासिक क्षमापना के साथ कहा- आपने अपने सद्व्यय से लाभ लिया। ये पुण्यानुबंधी पुण्य का कारण बना है। इतने लोगों ने तप, त्याग, आराधना, साधना, अनुमोदन का सारा श्रेय गिरधारीलाल शेरा जी परिवार को जाता है।

साध्वी पूर्णप्रभा श्री जी म.सा. ने विदाई के उद्बोधन में कहा कि चातुर्मास के बिना हमारे जीवन में संस्कार नहीं आ सकते जीवन में व्यवहारिक अभ्यास कितना ही ज्ञान हो किन्तु जीवन में यदि धर्म नहीं है तो कुछ नहीं ।

साध्वी हर्षप्रज्ञा श्रीजी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि चातुर्मास में जो भी हमारी आराधना की वो आराधना रत्नमयी की आराधना सम्यम दर्शन युक्त हो वही आराधना हमारे जीवन व्यवहार को बदल जाता है। उसी आराधना से हमारा मोह क्षय होता है वही मोक्ष है, हमारे विदाइ होने के बाद मोक्ष की आराधना जारी रखना।

मंच संचालन करते हुए अशोक भाई ने जीवन संस्कार के बारे में गहन प्रकाश डाला, बाबुभाई पालरेचा ने भी म. सा. से क्षमायाचना करते हुए कहा कि मैने कुछ नहीं किया, ये पुण्य से मिला समाज को अर्पण। चातुर्मास अनिवार्य है, साधु-साध्वी जी भगवंत के बिना जीवन में संस्कार नहीं टिक सकते संस्कार तो हमारे जीवन की नींव है चातुर्मास में हुई विविध सम्पूर्ण आराधना को विदित करते हुए अनुमोदना की साथ ही चातुर्मास में जिन जिन कमेटी, कार्यकर्ता, सकल होस्पेट संघ से योगदान रहा उनके प्रति आभार व्यक्त किया, उनका स्वागत किया गया।

संघ के महामंत्री मदनलाल जी सोलंकी ने कहा जब प्रवेश हुआ तब आनंद उमंग था आज के दिन हम सकल होस्पेट संघ गमगीन है। आप हमे छोड पधार रहे है। पूरा होस्पेट सुना हो जाएगा।

कुशल महिला मंडल में मंजुबेन पालरेचा आदि ने विदाईगीत सुनाकर सब की आँखे गीली कर दी,

विनय भाई कानुंगा ने विदाई गीत में सुदंर स्वर लहरी में कहा पालीतणा सुं आयो फोन आदेश आयो गणाधीश रो।

बंसतभाई पालरेचा ने पूज्य गुरूवर्या के प्रति श्रद्धाभाव समर्पित करते हुए कहा- चातुर्मास में 9 वर्ष पूर्व आपसे पहला सम्पर्क हुआ तब कुछ भी आराधना नहीं करता था मेरे जीवन में आपकी प्रेरणा से रंग भरा, मैं आराधना बना मेरे जीवन में जो टर्निंगप्वाइंट आया इसे जीवन पर्यंत अपने जीवन के पहलु में संभालकर संजोकर रखुंगा।

सुमन पालरेचा ने कहा- आपके आगमन पर पलके बिछाकर बैठे ये आज हम पलके झुकाकर बैठे है।

नवरजन जी बच्छावत ने कहा- कि आपने अपने अर्थ का विसर्जन बहुत ही शानदार और से सुव्यवस्थित किया उनकी हम अनुमोदना करता है।

पुखराज जी चौपडा ने कहा- कि इस चातुर्मासिक आराधना की पालरेचा परिवार के सभी कार्यकताओं की अनुमोदना का गुरूवर्या विदाई का दर्द जताया।

गदग से बाबुलालजी लुंकड ने कहा- पूज्य गुरूवर्या को चातुर्मास पश्चात हमारे गदगनगर को पावन करने की विनंती के साथ ही पालरेचा परिवार की अनुमोदना की।

बसंतीबेन, रोहिनीबेन पालरेचा एवं उगमबेन नाहर ने विदाई गीत से विदाई दी।

बसंतीबेन पालरेचा ने दर्द भरे शब्दों में पुन: हमारे क्षेत्र को सींचते से आपके बिना हम कहाँ आराधना करेंगे।

कांतिभाई पालरेचा ने अपने दर्द भरे शब्दों में कहा- मानव जन्म उच्चकुल पुण्य से मिलता है ये जिनमंदिर आराधना भवन, चातुर्मासिक आराधना करवाने का अवसर प्राप्त हुआ आप होस्पेट संघ के सहयोग से प्राप्त हुआ है। पूज्य गुरूवर्या द्वारा पालरेचा परिवार को दर्शन प्रतीक अर्पण किये गये।

पश्चात बाबुलाल जी गिरधारीलालजी परिवार की ओर सभी कमेटीयों का संघ अध्यक्ष भवरलालजी नाहर का आदि होस्पेट के अलग-अलग संघ के अग्रणीयों का गुरूजी आदि का बहुमान श्री फल माला साफा एवं प्रतीक द्वारा सभी का अभीनंदन किया गया।

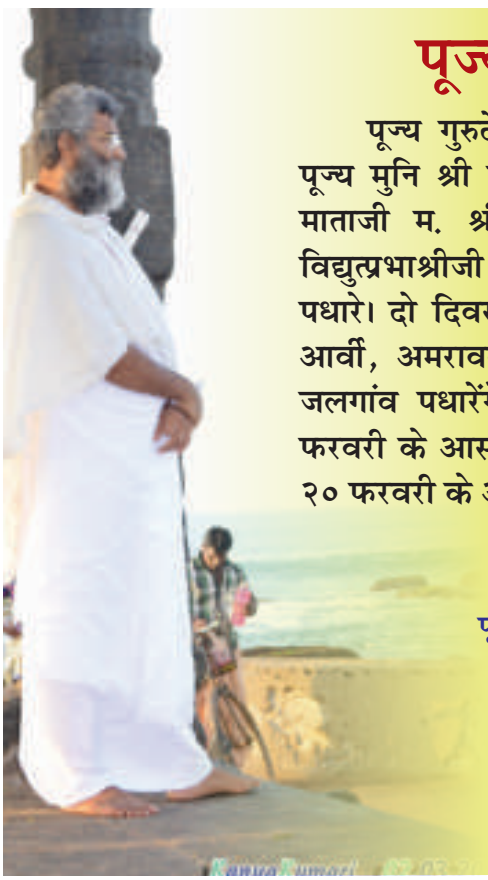

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा ६ एवं पूज्य माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा ११ ता. २० दिसम्बर को नागपुर पधारे। दो दिवसीय स्थिरता के पश्चात् विहार किया। वे तलेगांव, आर्वी, अमरावती, आकोला होते हुए १० जनवरी के आसपास जलगांव पधारेंगे। वहाँ से अमलनेर, नंदुरबार, सूरत होते हुए १ फरवरी के आसपास बडौदा पधारेंगे। वहाँ से विहार कर ता. १५ से २० फरवरी के आसपास पालीताना पधारेंगे।

संपर्क

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्री जिन हरि विहार धर्मशाला

तलेटी रोड़, पो. पालीताना-364270 (गुजरात)

फोन- मुकेश-98251 05823, 9784326130

mail- jahajmandir99@gmail.com

दिल्ली में महापूजा

दिल्ली महरौली नगर में मणिधरी दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के दरबार में पूज्य आचार्य श्री जिनमहोदयसागरसूरिजी म. सा. के प्रथम शिष्य पूज्य शासन प्रभावक मुनिराज श्री मणिरत्नसागरजी म. आदि ठाणा 2 एवं पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा 2 व पू. साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म. ठाणा 3 की पावन निश्रा में श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् दिल्ली शाखा की ओर से 29 नवम्बर 2015 को दादा गुरुदेव की बडी पूजा का भव्य आयोजन किया गया।

इस महापूजा में बडी संख्या में लोग उपस्थित हुए। पूजा व प्रसादी का लाभ श्री सोहनलालजी हीरालालजी मुसरपफ परिवार बीकानेर–दिल्ली वालों ने लिया।

– मनीष नाहटा

जहाज मंदिर के चुनाव संपन्न

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर की साधारण बैठक रायपुर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में व ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री जीतमलजी दांतेवाडिया की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

जहाज मंदिर में गौशाला का कार्य शीघ्र प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया। वहॉ चल रहे कार्यों की प्रगति रिपोर्ट महामंत्री डॉ. यू.सी.जैन ने प्रस्तुत की, जिस पर संतोष व्यक्त किया गया। उन्होंने बताया कि जहाज मंदिर में नीचे तल में कांच का बहुत ही बेहतरीन कार्य हुआ है। जिसे देखने बडी संख्या में यात्रीगण आ रहे हैं। बाहर पूरे परिसर में टाईल्स फिट कर दी गई है। साथ ही बगीचे का कार्य बहुत ही सुन्दर हुआ है। झूले आदि भी बडी संख्या में लगाये गये हैं।

धर्मशाला भी बहुत आधुनिक बनी है। अभी एक उपाश्रय, स्टाफ क्वार्टर आदि का कार्य प्रारंभ करना है। जबकि प्रसाधन खण्ड का निर्माण प्रारंभ है। बैठक के अन्त में ट्रस्ट मंडल द्वारा निवेदन किया गया कि ट्रस्ट का कार्यकाल पूर्ण हो चुका है। अतः विधान के अनुसार नये ट्रस्ट मंडल का गठन किया जावे।

आगामी तीन वर्ष के लिये इस प्रकार ट्रस्ट मंडल का गठन किया गया।

सलाहकार

श्री चंपालालजी मुथा, मांडवला
संघवी श्री जीतमलजी दांतेवाडिया, मांडवला
श्री उदयराजजी गांधी, जोधपुर
श्री चुन्नीलालजी संखलेचा, सिवाना

कार्यकारिणी

संघवी श्री मोहनलालजी दांतेवाडिया, मांडवला – अध्यक्ष
श्री द्वारकादासजी डोसी, चौहटन – कार्याध्यक्ष
संघवी श्री हंसराजजी मुथा, मांडवला – वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री भूरचंदजी जीरावला, जोधपुर– उपाध्यक्ष
श्री उत्तमचंदजी रांका, उम्मेदाबाद– उपाध्यक्ष
डॉ. यू.सी. जैन, उदयपुर– महामंत्री
श्री सूरजमलजी धोका, खण्डप– मंत्री
श्री मांगीलालजी संखलेचा, बाडमेर– मंत्री
श्री प्रकाशचंदजी छाजेड, जालोर– कोषाध्यक्ष
श्री मीठालालजी विनायकिया, जालोर– सहकोषाध्यक्ष
श्री श्री मदनजी संखलेचा, रामा– सहकोषाध्यक्ष
श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा, जसोल– निर्माण मंत्री
श्री कैलाश बी. संखलेचा, चेन्नई– जनसम्पर्क मंत्री
श्री किशनचंदजी बोहरा, जयपुर
श्री रिखबचंदजी मंडोवरा, सिणधरी
श्री रामरतनजी छाजेड, केशवणा
संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर
श्री जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर
श्री अंकितकुमार छाजेड, मांडवला
संघवी श्री विनोदकुमारजी गोलेच्छा, जीवाणा
श्रीमती पुष्पाजी ए. जैन, मुंबई
श्री धर्मेन्द्रकुमारजी पटवा, जालोर
श्री मीठालालजी भंसाली, गोल
श्री पारसमलजी बरडिया, ऑवलोज

श्री विनयकुमारजी सिंघवी, बिजयनगर
श्री संघवी शांतिलालजी मरडिया, चितलवाना
श्री पुरूषोत्तमजी सेठिया, बालोतरा
श्री गजेन्द्र संखलेचा, बालोतरा
श्री संघवी सुरेशकुमारजी भंसाली, अहमदाबाद
श्री पुष्पराजजी सोहनराजजी बोहरा जालोर
श्री दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री संतोषकुमारजी गोलेच्छा, रायपुर
श्री प्रमोदकुमारजी चौपडा, रायपुर
श्री भरतकुमार पालरेचा, मोकलसर
श्री मांगीलालजी लूंकड, उम्मेदाबाद
श्री बाबुलालजी कुन्दनाजी, सायला
संघवी पारसमलजी सूरजमलजी, बालवाडा
श्री राजूजी जैन सी.ए. जालोर
श्री नेमीचंदजी भंसाली, समदडी
श्री नरेश केवलचंदजी संखलेचा, रामा
श्री बाबुलालजी मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना
श्री बाबुलालजी गिरधारीलालजी पालरेचा, मोकलसर
श्री कान्तिलालजी मुलतानमलजी संघवी, मोकलसर
श्री नथमलजी पटवारी, मांडवला
श्री राजेन्द्रकुमारजी कागरेचा, ओटवाला
श्री गौतमजी, कुंदन ग्रुप, मेंगलवा
श्री भैरूलालजी सेठ, बैंगलोर
श्री विक्रमजी मांगीलालजी फुलामुथा, सायला
श्री मांगीलालजी फोलामुथा, सायला
श्री दीपचंदजी सांखला, समदडी
श्री मदनजी दांतेवाड़िया, मांडवला

बीकानेर में उपधान तप संपन्न

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य नयज्ञसागरजी म. आदि की निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप की भव्य आराधना चल रही है। ता. 3 दिसम्बर को माल महोत्सव का भव्य वरघोडा आयोजित किया गया। ता. 4 दिसम्बर को मोक्ष माला का विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पूज्य मुनिश्री ने मोक्ष माला का माहात्म्य समझाया। माला महोत्सव में पूरा बीकानेर जैसे उमड पडा था।

मालवा मेवाड ज्योति पद से अलंकृत

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुयायिनी एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. राजेन्द्रश्रीजी म.सा. पू. विजयेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. का नीमच नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हुआ। चातुर्मास परिवर्तन हेतु पूज्याश्री श्री राजमलजी शौकीनकुमारजी चण्डालिया के निवास स्थान पर पधारे। जहाँ श्री भीडभंजन पार्श्वनाथ ट्रस्ट की उपस्थिति में सकल श्री संघ ने पूज्याश्री को मालवा मेवाड ज्योति अलंकरण से सम्मानित किया गया। उन्हें कामली ओढाई गई।

श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ, मदुरै का स्नेह मिलन कार्यक्रम संपन्न

मदुरै के श्री सिवान्ची ओसवाल जैन संघ का दसवां वार्षिक स्नेह मिलन कार्यक्रम नगर के तीरूपाले स्थित श्री जैन विद्यालय में सम्पन्न हुआ जिसमें सिंवाची क्षैत्र के सदस्यों ने उत्साह व उमंगपूर्वक भाग लिया। रविवार दि. 15-11-15 को सुबह 9.00 बजे सभी सदस्य जैन विद्यालय पहुंचे जहाँ अल्पाहार के पश्चात् कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ । सम्पूर्ण कार्यक्रम में सभी सदस्यों ने उत्साह व उमंगपूर्वक भाग लिया। अंत में सभी विजेताओं को पारितोषिक वितरित किए गए एवं पांच बम्पर लक्की ड्रा खोले गए। कार्यक्रम का संचालन धनराज लोढा ने किया।

धमतरी में ऐतिहासिक प्रवेश

पूज्य गुरूदेव खारतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा अपने शिष्य पू. मुनि श्री श्रेयांस प्रभसागरजी म. के साथ महासमुन्द से नवापारा, राजीम होते हुए धमतरी पधारे। ता. 3 दिसम्बर 2015 की शाम महासमुन्द से विहार कर फिंगेश्वर, किदवई होते हुए ता. 5 को नवापाटा राजीम पधारे। जहाँ स्थान-स्थान पर गहुलियों से पूज्य श्री को बधाया गया। आराधना भवन में संपन्न धर्म सभा में श्री संघ द्वारा पूज्य श्री का अभिनंदन किया गया। पूज्य श्री के प्रवचन से श्री संघ मंत्र मुग्ध हो गया। श्री संघ की आग्रह भरी विनंती को स्वीकार कर विहार स्थगित कर वहीं रूकें। रात्रि में दो घंटे धर्म चर्चा चली, जिसमें बडी संख्या में जिज्ञासु पधारे।

ता. 6 दिसम्बर को विहार कर पूज्य श्री ता. 8 को धमतरी पधारे जहाँ श्री जैन व मू. पू. संघ द्वारा भव्य नगर प्रवेश कराया गया। शहर में प्रथम बार पूज्य गच्छाधिपति जी के पधारने पर जगह-जगह तोरणद्वार लगाये गये थे। पूरा शहर उमड़ पड़ा था, स्थानक वासी संघ, अग्रवाल समाज, सिंधी समाज, दिगम्बर संघ आदि ने गहुंलियां कर पूज्य श्री का अभिनंदन किया। शहर के सभापति राजेन्द्र द्वारा गहुँली रचाई गई। दो घंटे चली शोभायात्रा में शहर का युवावर्ग नृत्य आदि द्वारा अपने उल्लास को व्यक्त कर रहा था।

आराधना भवन में पूज्य श्री ने फरमाया- आज तो ऐसे तग रहा है, जैसे चौमासे का प्रवेश हो। शासनप्रभा श्रीजी का बहुत ही ऐतिहासिक चातुर्मास रहा। बहिन म.सा. का भी पदार्पण हुआ।

संचालन आकाश गोलेच्छा ने किया। संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद जी बैद ने पूज्य श्री का अभिनंदन किया। सौ. अनिता पारख ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री विजयराज जी गोलेच्छा का अनुमोदनीय पुरूषार्थ रहा। प्रवेश पर रायपुर, महासमुन्द, राजीम, नगरी, जामगांव, दल्ली राजहरा आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में लोगों का आगमन हुआ। दो दिन का प्रवाम संपन्न कर पूज्य श्री ने नागपुर की ओर विहार किया।

खरतरगच्छ युवा परिषद् के बढते चरण

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से युवा संघ के अभिनव जागरण के लक्ष्य से पूरे भारत में खरतरगच्छ युवा परिषद् की शाखाओं का गठन किया जा रहा है।

सर्वत्र एक ही नाम से परिषद् का गठन होगा। हर शहर व गांव में शाखाओं की स्थापना की जायेगी। वे शाखाऐं केन्द्रीय परिषद् की सदस्य बनेगी। उनके प्रतिनिधि ही केन्द्रीय समिति के सदस्य होंगे। इस प्रकार पूरे भारत में खरतरगच्छ के युवा समाज की एक संगठित श्रृंखला का निर्माण होगा।

अभी तक रायपुर, बाडमेर, अहमदाबाद, मुंबई, बैंगलोर, इचलकरंजी, महासमुन्द, दिल्ली, भीलवाडा, चेन्नई, बालोतरा, दुर्ग, बडौदा, सोलापुर, कोट्टूर, जगदलपुर, भिंवडी, सिवाना, फलोदी, कोयम्बतूर, धमतरी, ईरोड़, तिरुपुर आदि स्थानों पर शाखाओं का गठन किया जा चुका है।

साधु साध्वीजी भगवंतों का विहार प्रारंभ हो गया है। विहार की व्यवस्था सम्हालने के लिये केयुप (खरतरगच्छ युवा परिषद्) पूर्ण समर्पित भावों के साथ जुट गया है। समस्त शाखाओं को कार्य भार सौंप दिया गया है।

समस्त संघों से भी निवेदन है कि वे वैयावच्च के इस महान् कार्य में केयुप को पूरा पूरा सहयोग दें।

सिवांची जैन युवा मंडल चेन्नई की सेवाएँ

श्री सिवांची जैन युवा मंडल चेन्नई हमेशा से सेवा के कार्यो में अग्रणी रहा है। चाहे जीव दया, मानव सेवा, अनुकम्पा दान आदि।

इसी क्रम में इस बार चेन्नई में तीन दिनों से लगातार बाढ़ प्रभावित इलाको में जाकर जरूरत मंद चीजो का वितरण किया गुरूवार को सेंट्रल पर यात्रियों को खाना वितरित किया वही शुक्रवार को वेलचेरी इलाके में जहा प्रवास इलाके में 5 फीट पानी था वहां दूध के पैकेट, ब्रेड, मोमबत्ति बांटी और शनिवार को क्रूकपेट इलाके में जहा 3 फीट पानी था और गरीब बस्ती थी वहा कम्बल बांटे और रविवार को तिरूविंमियुर इलाके में बाढ़ से प्रभावित लोगो को स्टील की प्लेट, प्लास्टिक कप, मोमबत्ति, दूध का पैकेट, बिस्कुट के पैकेट, राशन पानी की बोतल आदि बांटा। इस सेवा कार्यो में मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्तिथि रही! मंडल सदस्यों ने इस काम में तन मन धन से सहयोग दिया।

तिरूपुर में केयुप का गठन

तमिलनाडु के तिरूपुर शहर में अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन किया गया केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतनलाल बोथरा के मुख्य आतिथ्य में युवाओं की बैठक संपन्न हुए। जिसमें श्री सोहनजी बोथरा को अध्यक्ष चुना गया। श्री दिनेश जी बोथरा-उपाध्यक्ष, श्री भरत मालू-महामंत्री, श्री गौतम संखलेचा-कोषाध्यक्ष, श्री आजाद धारीवाल-सहमंत्री व संजय छाजेड़-सह कोषाध्यक्ष चुने गये।

कोयम्बतूर शाखा का गठन

कोयम्बतूर तमिलनाडु में अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् की शाखा का गठन हुआ जिसमें दीपक नाहटा को अध्यक्ष चुना गया। निर्भय गोलेच्छा-उपाध्यक्ष, राकेश गोलेच्छा-सचिव तथा जितेन्द्र बाफना को कोषाध्यक्ष बनाया गया।

धमतरी

छत्तीसगढ के धमतरी नगर में अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन किया गया युवाओं की बैठक में सर्वसम्मति श्री नीलेश पारख अध्यक्ष बने। श्री आकाश गोलेच्छा को सचिव बनाया गया। श्री अरिहंत पारख व पिंटू गोलच्छा को उपाध्यक्ष बनाया गया। श्री रिषभ गांधी व प्रिन्स गोलेच्छा सहमंत्री, आशिष लोढ़ा को कोषाध्यक्ष तथा पिंटू डागा को प्रचार मंत्री बनाया गया।

तिरूपातूर

तिरूपातूर नगर में अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन किया गया। श्री राजेश कवाड़ को अध्यक्ष चुना गया। श्री धनराजजी गोलेच्छा को मंत्री तथा विजयजी गोलेच्छा को कोषाध्यक्ष चुना गया।

मुनिद्वय का फलोदी चातुर्मास सानन्द सम्पन्न

खतरगच्छ जैन संघ, फलोदी द्वारा दि. 20-11-15 को भंवरलाल जी बच्छावत को सर्व सम्मती से संघ के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। पूर्व अध्यक्ष कन्हैयालाल जी गोलेच्छा के स्वर्गवास के बाद से ही यह पद रिक्त था।

दि. 29-11-15 को बड़ी धर्मशाला में, फलोदी में चातुर्मास कर रहे मुनि मुक्तिप्रभसागर जी म.सा. तथा मुनि मनीषप्रभसागर जी म.सा. के विदाई का समारोह आयोजित हुआ। खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष भंवरलाल जी बच्छावत ने संघ की तरफ से म.सा. से क्षमायाचना की तथा फलोदी में चातुर्मास कर यहां धर्म जागृति फैलाने के लिए आभार व्यक्त किया। म.सा. ने भी संघ के आशीर्वाद देते हुए मन-वचन-काया से क्षमायाचना की। म.सा. ने कहा की चातुर्मास के दौरान हमारे द्वारा किसी को भी किसी प्रकार की ठेस पहुंची हो तो हमें क्षमा कर दें।

गौतचन्द जी कोठारी ने समारोह के दौरान अपने वक्तव्य में बताया कि मुनि मनीषप्रभसागरजी म.सा. अपनी दीक्षा के 28 वर्ष बाद अपनी मातृभूमि फलोदी में प्रथम बार चतुर्मास करने पधारे है और आज फलोदी से उनकी विदाई का समारोह मनाया जा रहा है। महीपाल जी कोठारी ने बताया की साधु का जीवन जल की तरह होता है। बहते रहना जल का गुण है तथा चलतें रहना साधु का वैसे विदाई का दु:ख तो सबको होता है पर जैन धर्म की यही परम्परा है कि चातुर्मास के बाद साधु भगवतों को विहार करना ही होता हैं।

विदाई समारोह को महावीर महिला मण्डल तथा पदमपुष्प मण्डल के विदाई गीतों ने और भावुक बना दिया। करिश्मा झाबक, शिल्पा झाबक तथा कामना बच्छावत ने अपने शब्दों से चातुर्मास की सम्पूर्ण यादों को सबके जहन में ताजा कर दिया।

चातुर्मास के दौरान धार्मिक ज्ञान शिवीर, दादा गुरूदेव का महापुजन, जम्बू कुमार के जीवन चरित्र पर आधारित धार्मिक नाटक, तथा शाशन चक्र तप आदि का सफल आयोजन हुआ। चातुर्मास में अठम तप तथा अठाई तप भी हुए।

म.सा. का 30-11-15 को दोपहर 12.30 बजे फलोदी से विहार हुआ 29-11-15 को दोपहर 2.00 बजे चुडीघरों के मोहल्लें में स्थित जैनों की बड़ी धर्मशाला में मुनि मुक्तिप्रभसागर जी म.सा. तथा मुनि मनीषप्रभसागर जी म.सा. के सानिध्य में अखिल भारतीय खतरगच्छ युवा परिषद की फलोदी शाखा का गठन हुआ। इसमें सर्वसम्मती से ललित बच्छावत को अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, हर्ष कोठारी, रवीन्द्र नाहटा व राहुल गोलेच्छा को चुना गया। सदस्यों के रूप पारस कोठारी, नितेश नाहटा, मनीष झाबक, आशीष गोलेच्छा, राकेश गोलेच्छा, सुशील बच्छावत, मांगीलाल गोलेच्छा, यशपाल कोठारी, कमल कोठारी, धनराज लुणावत, अंकित गोलेच्छा, मुकेश कोठारी, गजेन्द्र गोलेच्छा, धीरज झाबक, राजेन्द्र बोथरा, कमल झाबक, जितेन्द्र बच्छावत, पवन बच्छावत, ललित गोलेच्छा व प्रदीप बच्छावत को चुना गया।

बोथरा परिवार आयोजित चैन्नई से तीर्थयात्रा संघ

चैन्नई महानगर से तीर्थ यात्रा संघ ता. 23 दिसम्बर 2015 को प्रस्थान कर ता. 2 जनवरी 2016 को वापस चेन्नई पहुंचा। संघयात्रियों ने मेहसाणा, शंखेश्वर, कच्छ भद्रेश्वर, सिद्धाचल महातीर्थ आदि तीर्थों की यात्रा की। पूज्य खरतरगच्छाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म. के आशीर्वाद से इस संघ का आयोजन नागौर चेन्नई निवासी श्रीमती उगमकंवर रतनचंदजी बोथरा परिवार ने किया। इस हेतु ता. 20 दिसम्बर को श्री सिद्धचक्र महापूजन आयोजित किया गया।

श्री सिद्धाचल यात्रा पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पू. दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि की निश्रा में संपन्न हुयी।

धोबीपेट में चातुर्मास सानन्द सम्पन्न

प.पू. मरूधरमणि गच्छाधिपति उपाध्यायप्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के असीम आशीर्वाद से तथा खान्देश शिरोमणि प.पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन कृपा से पू. गुरूवर्या श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का धोबीपेट की पावन धरा पर ता 25 जुलाई के दिवस चातुर्मास प्रवेश हर्षोल्लास से हुआ। हमारी लाडली चेन्नई कुलदीपिका प.पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. के प्रभावी प्रवचन से हमारे संघ में गौतमकमलतप, पंचपरमेष्ठि, कई मासक्षमण 16 उपवास, अट्ठाईयां, सामूहिक अट्ठम, आंयबिल इत्यादि कई तप तथा पूजन, महापूजन, हर त्यौहार को आध्यात्मिक look, ज्ञानगोष्ठि, प्रश्नोत्तरी, स्वाध्याय, पर्यूषणपर्व में कंठस्थ बारसासूत्र वांचन, शिविर, जाप आदि रोमांचक ढंग से सपन्न हुए। पूज्या श्री का प्रवचन पूरे चेन्नई में चर्चित था। विशेष गुरूवर्या श्री की विशिष्ठ प्रेरणा से कायमी

आर्यंबिल आदि संपूर्ण धार्मिक कार्यो के लिए भूमि खरीदी गई एवं आपश्री की निश्रा में भूमिपूजन, खननमुहूर्त्त एवं शिलान्यास का कार्यक्रम ठाट-बाट के साथ हुआ। चार महीने प्रवचन सतत चलता रहा। कार्तिक पूर्णिमा की भावयात्रा भव्य हुई। आवाल वृद्ध आध्यात्मिक से जुडे। ता.30 नवम्बर गुरूवर्या श्री की विदाई.... मानों दिल रो पड़ा। 30 साल के इंतजार को इतनी जल्दी विराम दे दिया। यही संयम जीवन है। कुल मिलाकर संपूर्ण चेन्नई में ऐतिहासिक चातुर्मास रहा।

सोलापुर में स्वर्ण महोत्सव

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आज्ञानुयायी पूजनीया शतायुसंपन्ना समुदायाध्यक्षा महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. के 50 वर्षीय संयम जीवन की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में त्रि दिवसीय प्रभु भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव पूजनीया पार्श्व मणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न होगा।

इस महोत्सव का शुभारंभ 18 दिसम्बर को पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा से होगा। ता. 19 को जयतिहुअण महापूजन पढाया जायेगा। तथा ता. 20 को मुख्य कार्यक्रम गुणानुवाद सभा के साथ चारित्र वंदनावली का कार्यक्रम होगा। चारित्र वंदनावली कराने के लिये चेन्नई से शासन रत्न श्री मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा पधारेंगे। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी।

नीमच में जन्म दिवस मनाया

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आज्ञानुयायी पूजनीया प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. राजेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पू. वाणी सिद्ध श्री विजयेन्द्रश्रीजी म. की चरणाश्रिता पू. श्री गुणरंजनाश्रीजी म. का 50वां जन्म दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर पू. साध्वी श्री विनयरत्नाश्रीजी म. का सानिध्य प्राप्त हुआ। जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ता. 21 नवम्बर को दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। दोपहर में चौबीसी का आयोजन किया गया। ता. 22 नवम्बर को जन्म दिवस के उपलक्ष्य में धर्मसभा का आयोजन किया गया। जिसमें कई विशिष्ट अतिथि पधारे।

राजनांद गांव में विकलांग शिविर सम्पन्न

परम पूज्य गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिश्री समयप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 2 एवं पूजनीय प्र. श्री प्रमोद श्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. पू. बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 11 की निश्रा में राजनांद गांव में 9-12-2015 को विकलांग शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर के आयोजक सिंघी, भंसाली एवं डाकलिया परिवार थे।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर श्री मुकेश बंसल एवं अध्यक्ष नरेश डाकलिया थे।

पूजनीया बहिन म.सा. रायपुर चातुर्मास सम्पन्न करके धमतरी क्षेत्र की स्पर्शना करते हुए राजनांद गांव पधारे थे।

पू. मुनि श्री एवं पूज्या साध्वी जी म. की प्रेरणा एवं सान्निध्य में सम्पन्न हुए इस शिविर में विकलांग व्यक्तियों को पांव अर्पण करने के साथ-साथ केंसर जांच, रक्तदान कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम को मुनिश्री विरक्तप्रभ सागरजी म. ने संबोधित करते हुए गुरू की महिमा का वर्णन किया।

पूजनीया बहिन म.सा. ने अपनी गंभीर सधी हुई आवाज मे जब सभा को संबोधित किया तो एक समा सा बंध गया। उन्होंने मानव जीवन में सेवा के धर्म को सर्वोपरि बताया। इस अवसर पर चातुर्मास विदायी लेते हुए साध्वी नीलांजना श्रीजी म. ने भी सकल संघ से क्षमापना की। इस कार्यक्रम में कविता कोटडिया ने स्वागत-विदायी गीत प्रस्तुत किया तो संजयजी सिंघी, ललितजी भंसाली एवं नरेन्द्रजी डाकलिया ने भी अपने भाव अभिव्यक्त किये। इस शिविर को सफल बनाने के लिये संजयजी अजयजी सिंघी, ललितजी-मनीषजी भंसाली व नरेन्द्रजी डाकलिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन रितेश लोढा ने किया। इस कार्यक्रम से पूर्व मुनिश्री एवं साध्वीजी म. ने राजमलजी, ललितजी, मनीषजी भंसाली परिवार के निवेदन पर उनके निवास पर पगलिये भी किये।

जालना शहर में ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न

श्री धर्मनाथ जैन श्वे. मंदिर एवम् श्री जिनकुशलसुरी गुरू मंदिर दादावाडी के परम पवित्र प्रागंण ''जिनकुशल नगरी'' जालना में 100 वर्षो पश्चात प्रथम बार पार्श्वमणि तिर्थ प्रेरीका गुरूवर्या प.पू. श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. उग्रतपोरत्ना प.पू. सुलक्षणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या समतामुर्ति प.पू. साध्वीजी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. मधूर व्याख्यानी प.पू. श्री प्रियलताश्रीजी म.सा. कंठ कोकीला प.पू. श्री प्रियंवदनाश्रीजी म.सा. प.पू. प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म.सा., प.पू. प्रियदर्शाजनाश्रीजी म.सा., प.पू. प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का ऐतिहासिक एवम् अविस्मरणिय चातुर्मास पूर्ण हर्ष उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

आपश्री के पधारने से जालना नगर में तप, जप, आराधना की जैसे झडी ही लग गयी, आपश्री के व्याख्यान को श्रवणकर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नया परिवर्तन आया है। नित नये, विभिन्न आयोजन की अनूठी आभा से सभी को प्रभूदित किया है,

आपश्री की प्रेरणा से श्री सम्मेत्‌शिखरजी तप का 132 तपस्वियों ने लाभ उठाया है चार मासक्षमण, 3 खिर समुदर, 11 अट्ठाईया, और अखंडित अट्ठम और आयंबिल हुए है, नवपदजी की ओली में भी भाई-बहनो ने जूडकर लाभ लिया है,

धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में

1. श्री सिमंधर भावयात्रा 2. श्री पार्श्वनाथ भगवान के दस भव 3. वामा माता का थाल 4. नेमीनाथ भगवान पंचकल्याणक महोत्सव 5. गुरूदेव वंदनावली 6. अमावस को चाँद उगायो जो की जालना नगर में पहली बार दादागुरूदेव के जीवन पर आधारित नाटीका देखने को मिली है। जालना दादावाड़ी के 100 वर्ष पूर्ण हेतू शताब्दी वर्ष महोत्सव उपलक्ष में पंचान्हिका महोत्सव भी मनाया गया जिसमें त्रिदिवसीय माँ सरस्वती जाप अनुष्ठान, परचान माँ सरस्वती महापूजन, दादागुरूदेव महापूजन, सिद्धचक्र महापूजन आदि का लाभ सभी ने लिया आपश्री के चातुर्मास हेतु जिनकुशल नगरी में बने

1. कुशल कांतिमणि प्रवचन हॉल का लाभ- श्रीमती मानकुवर बाई गेलड़ा
2. प्रेम सुलोचना स्वाध्याय भवन का लाभ- मदनराजजी पवनराज सुराणा
3. लब्धिनिधान गुरू गौतम भोजन कक्ष का लाभ- सौ निर्मलादेवी वि. सिंघवी
4. सुखसागर प्याऊ का लाभ- लातुर निवासी बि.बि. ठोम्बरेजी तथा चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी के रूप में श्रीमान सेठश्री जवाहरमलजी चम्पालालजी मुथा परीवार ने लाभ लिया

सम्मेत्‌शिखर तपस्वीयों का भव्यातिभव्य वरघोड़ा, पारणा तथा फलेचुंदडी का लाभ चार महानुभवों ने मिलकर लिया।

1. सौ कमलादेवी पारसमलजी देसरडा 2. सौ लीलादेवी सुगनचंदजी देसरडा 3. देवचंदजी चत्रभुजजी सेठ 4. श्रीमती मानकुवर बाई सुरजमलजी गलेडा। यहॉ विराजीत सबसे छोटे म.

सा. प.पू. प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म.सा. ने मासक्षमण कर जालना नगरी को धन्य कर दिया किसी साधु संतो ने जालना नगर में पहलि बार मासक्षमण किया जो एक अविस्मरणिय है, जिसमें पन्चान्हिका महोत्सव मनाया गया और म.सा. को पारणा कराने का लाभ सौ. नवलदेवी सुखलालजी कुंकुलोल परीवार ने लिया पच्छकावणी के दिन जालना सलसंघ को स्वामीवात्सल्य रखा गया जिसका लाभ श्री चम्पालालजी एवम् हेमेन्द्र भाई ने लिया।

चौथे दादा जिनचंद्रसुरी श्रीजी की पुण्य तिथी एवम् आचार्य श्री मज्जिन जिनकांतिसागरसूरि श्रीजी की पुण्य तीथी के उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा एवम् श्रद्धांजली समर्पित की व महापूजन का आयोजन किया।

अंत में विशेष जो ध्येय लेकर आपश्री यहाँ पधारे वो 100 वर्ष प्राचीन दादावाडी का जिर्णोद्धार कार्य गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आज्ञा एवम् मुहुर्तनुसार प्रारंभ किया जिसमें प्रथम दादागुरूदेव का उत्थापन कर अनुकुल सुस्थान पर चल प्रतिष्ठा करवाई गयी तत्पश्चात ता. 6-12-15 रविवार को भूमिपूजन एवम् खनन कर इस कार्य की शुरूआत कराई गई ता. 4-12-15 सोमवार को शिलान्यास का कार्यक्रम करने के पश्चात् पूज्याश्री जालना से विदाई लेते हुए अपना विहार प्रारंभ कर पालीताना की ओर प्रस्थान करेंगे।

जालना श्रीसंघ आज्ञा प्रदाता प.पू. गणाधिश मणिप्रभसागरजी म.सा., प.पू. गुरूवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. तथा आप पूज्याश्री का सदा सदा ऋणी रहेगा और अंत में हम यही कहेंगे कि समतामूर्ति की समता देखी, मधुर व्याख्यानी को सुन व्याख्यान में कोकिल कंठी का सुर भी देखा, और सब लग गये ध्यान में इतनी शन्ति प्रदान करो, हम आपके बताये मार्ग पर चल पायें । जो बिडा उठाया है जिर्णोद्धार का, उसे जल्द से पूरा कर पायें ।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, बैंगलोर के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न

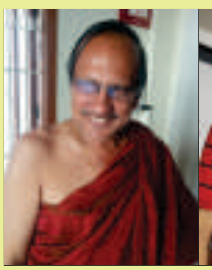

बैंगलोर। दिनांक 27 दिसम्बर रविवार को श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, बैंगालोर की सभा रखी गयी जिसमें श्री पुखराजजी कवाड़ को संघ का सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुना गया एवं उन्होंने अपनी कार्यकारिणी का गठन किया जिसमें उपाध्यक्ष पद हेतु श्री तनसुख गुलेच्छा एवं श्री लाभचन्दजी मेहता, महामंत्री पद हेतु श्री अरविन्द कोठारी एवं कोषाध्यक्ष हेतु श्री गजेन्द्र संकलेचा का गठन किया गया।

कार्यसमिति सदस्य हेतु श्री अशोक चौपड़ा, श्री राकेश डाकलिया, श्री प्रकाश भंसाली, श्री प्रवीण रांका, श्री सज्जनसिंह खटोड़, श्री पंकज बलदोटा, श्री प्रकाश चौपड़ा, श्री राशि चौपड़ा, श्री पारसमल पगारिया, श्री महावीर लुंकड़, श्री भरत रांका, श्री हीराचंद बुरड़, श्री मुकेश पारख, श्री ललित डाकलिया कार्यसमिति आगामी 2 वर्षों के लिए चुनी गयी हैं कार्यसमिति के नेतृत्व में संघ को भरपुर सफलता के साथ नयी ऊचाईयां तय करेगी एवं समाज में युवाओं में जागृति पैदा करेगी।

– अरविन्द कोठारी

पालिताना में सम्मेलन करने चतुर्विध संघ को बुलाया है

सचिन पारख
अखिल भारतीय खर. युवा परिषद

धन्य-धन्य गुरु के उपकार,
कितना कष्ट सहते गुरुराज।
लम्बे विहार, सर्दी का प्रहार,
बह रही शीतल लहर बेशुमार।
छोटे-छोटे बाल मुनि सेना,
सोने के लिए नहीं गरम बिछोंना।
नहीं ओढ़ते मख़मल रज़ाई,
न शाल ओर स्वेटर की गरमाई।
शीत लहर चला रही बेरहमाई,
जुल्म ढा रही है मनमानी।
मेरे गुरुराज तो करे न सुनवाई,
चले जा रहे बन सेनानी।
न डर, न शिकवा, न परेशानी
धुन के पक्के, दृढ़ मनोबल धारी।
धन्य-धन्य गुरु के उपकार,
ऐसे गुरु पर हम करते नाज़।
चलते रहते है गुरुवर सदा,
अपना फर्ज धर्म का करते अदा।
संग में धर्म। प्रभावना करते जाते,
हर भक्तों की विपदा हरते जाते।
चरण कमल से पावन करते जाते,
धर्म की ध्वजा गाव गाव फहराते जाते।
डंका धर्म का बजाया है
हर भक्तों को जगाया है।
पालिताना में सम्मेलन करने
चतुर्विध संघ् को बुलाया है
अब हो खरतर गच्छ का विकास
फैलेगी नई ऊर्जा नया प्रकाश,
मणिप्रभ गुरु वर जैसे कोई न सानी।
हमको मालुम है मिट जायेगी सब परेशानी,
हर गाव नगर से आएंगे श्रावक गण
सम्मेलन में होगर जब हर जन
सब दुविधाओं को मिटायेंगे
फिर से गच्छ की महिमा बढ़ाएंगे
अब आना है हम सबको पालिताना
छोड़ के सब अपना खाना पीना
फिर से नई जाग्रति लाएंगे।
खरतर युवा परिषद के संग
जिन शाश्न का मान बढाएंगे।

बैगानी परिवार जयपुर द्वारा

श्री शत्रुंजय छःरी पालित तीर्थयात्रा आयोजित

पूज्य पिताश्री शानुरामजी एवं माताश्री श्रीमती वीरांबाईजी के आशीर्वाद से आयोजित आदर्श नगर, जयपुर निवासी भ्राताद्वय संघवी श्री सुरेशकुमारजी, सुभाषचंदजी बैगानी परिवार द्वारा संघयात्रा का आयोजन किया गया। संघयात्रा ने दि. 25 दिसंबर को जयपुर से रेल द्वारा मेहसाणा के लिये प्रस्थान किया। मेहसाणा से बसों द्वारा शंखेश्वर, धोलका आदि तीर्थों की वंदना-स्पर्शना-पूजना करते हुये दि. 28 दिसंबर को सोनगढ के गुणोदय धाम से पैदल संघ के रूप में छःरी के नियमों का पालन करते हुये प्रस्थान किया।

राजेंद्र विद्याधाम, अढीद्वीप में विश्राम करते हुये इस तीर्थयात्री संघ ने दि. 30 दिसंबर को श्री शत्रुंजय तीर्थ में भव्य शोभायुक्त वरघोडा के साथ प्रवेश किया। दि. 31 दिसंबर को गिरिराज की यात्रा, मूल शिखर पर ध्वजारोहण व स्नात्र मंडप में तीर्थमाला का विधिविधान भावोल्लास के साथ हुआ। इस तीर्थयात्रा में पूज्य गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म., मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा एवं साध्वीवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. व प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता प्राप्त हुयी। पालीताणा में संघ का विश्राम भीनमाल भवन व दक्ष विहार में हुआ। संघयात्रा के दौरान प्रतिदिन उभयकालिक प्रतिक्रमण, स्नात्रपूजा, विविध महापूजन, प्रवचन, गिरिराज वधामणा आदि धर्माराधना आयोजित हुयी। श्री जिनहरि विहार समिति की ओर से महामंत्री बाबुलालजी लुणिया ने संघवी परिवार का बहुमान कर अभिनंदन पत्र भेंट किया। संघ यात्रा को सफल बनाने में संघवी सचिन कुमार बैगानी, सिद्धार्थ कुमार बैगानी का पूर्ण पुरुषार्थ रहा। संघ की प्रेरणा सिरोही नि. मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण की रही।

प्रेषक : भगिरथ शर्मा, पालीताणा

बोहरा प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक मनोनीत

श्री आर्य गुण गुरूकृपा जैन श्वेताम्बर तीर्थ, रामजी का गोल में आगामी 21 जनवरी 2017 को आयोजित होने वाले प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का मुख्य संयोजक सुप्रसिद्ध समाजसेवी भीमराज बोहरा को मनोनीत किया गया।

तीर्थ प्रेरक पूज्य आचार्य भगवंत श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होगा। इस प्रतिष्ठा महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने के लिए गठित प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का मुख्य संयोजक सुप्रसिद्ध समाजसेवी मूल बाड़मेर निवासी भीमराज बोहरा जयपुर को मनोनीत किया गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं। महोत्सव के चढ़ावों की प्रथम जाजम 24 जनवरी 2016 को मुंबई के दादर उपनगर में आयोजित होगी।

लूणकरण सिंघवी, मंत्री

पूज्य गणाधीशजी नागपुर पधारे

पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 एवं पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म., पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 11 के नागपुर वर्धमान नगर में पधारने पर स्थानीय श्रीसंघ द्वारा भव्य सामैया किया गया। पूज्यश्री के प्रभावशाली प्रवचन के पश्चात् श्री शांतिलालजी रुपेशकुमारजी गुलेच्छा की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। ता. 20 दिसम्बर को पूज्यश्री वर्धमान नगर बिराजे। नागपुर श्रीसंघ की ओर से चातुर्मास की विनंती की गई। पूज्यश्री ता. 21 दिसम्बर को इतवारी स्थित अजितनाथ मंदिर पधारे। श्री अशोककुमारजी बरडिया परिवार की ओर से नाश्ते का आयोजन किया गया। भव्य सामैये के साथ अजितनाथ मंदिर पधारे। श्रीसंघ के अध्यक्ष प्रभात धारीवाल ने पूज्यश्री का भावभीना अभिनंदन किया।

पूज्यश्री ने कहा-नागपुर भाग्यशाली है, जहाँ महत्तरा मनोहरश्रीजी म. जैसे प्रभावशाली व सरल स्वभावी साध्वीजी म. वर्षों तक बिराजे। नागपुर संघ ने भी अद्‌भुत वैयावच्च की। श्रीसंघ की ओर से पांच सात दिन बिराजने की विनंती की गई पर पालीताना सम्मेलन के लक्ष्य से विहार जरुरी है। इस अवसर पर धमतरी, रायपुर, गोंदिया, सांचोर, मुंबई, आर्वी आदि स्थानों से बड़ी संख्या में लोग पधारे।

प्रेषक - मुकेश प्रजापत

श्री सिवान्ची जैन युवा संगठन ग्रेटर हैदराबाद

श्री सिवान्ची जैन युवा संघठन द्वारा मौन ग्यारस के अवसर पर मानव सेवा में कम्बल व स्वेटर का वितरण किया गया। श्री सिवान्ची जैन युवा संघठन द्वारा दो दिवसीय मानव सेवा के कार्य में दिनांक 21व 22 दिसम्बर को मध्य रात्री लगभग 12.30 बजें तक श्री शंखेश्वर अपार्टमेन्ट गोशाला से शुरू कर बेगम बजार, हाईकोर्ट, इमलीबन बस डिपो, मलकपेट दिलसुख नगर, काचीगुडा, नागपली, हैदरगुडा, बशीरबाग, आबिड्स और कई अलग-अलग स्थानों पर फुटपाथ पर सोये हुये बेसहारा जरुरत मन्द लोगों को कम्बल व स्वेटर का वितरण कर मानव सेवा का कार्य किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष उत्तम संकलेचा, उपाध्यक्ष संजय माण्डोत, मंत्री इन्दर मेहता, सहमंत्री अमित छाजेड़, कोषाध्यक्ष कान्तिलाल पोमाणी, अमृतलाल पालरेचा महेन्द्र बाफना, रमेश संकलेचा, जितु देवडा धोका, मनिष बागरेचा, महाविर जैन, धीरज चोरडिया, विकास श्री श्रीमाल, श्रीपाल लूकड़, रोनक बागरेचा आदि सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 ने फलोदी चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् ता. 30 नवम्बर को रामदेवरा की ओर विहार किया है। वहाँ से बाडमेर होते हुए पालीताना पधारेंगे।

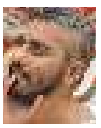

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. बाल मुनि मलयप्रभसागरजी म. रायपुर, कैवल्यधाम, दुर्ग होते हुए राजनांदगांव पधारे, वहाँ से ता. 13 को पू. श्री के साथ नागपुर होते हुए पालीताना की ओर विहार किया है।

पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युतप्रभाश्रीजी म. ठाणा 11 ता. 20 दिसम्बर तक नागपुर पहुँचेगे। वहाँ से पूज्य गणाधीशजी के साथ पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया गणरत्ना पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सोलापुर में बिराजमान है। वे मौन एकादशी की आराधना करवाने के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 10 ने हॉस्पेट में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर पालीताना की ओर विहार किया है। वे मौन एकादशी सोलापुर में करेंगे।

पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 4 ने बाडमेर नगर के तपोमय चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् चौहटन होते हुए पालीताना की ओर विहार किया है।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 3 ने धमतरी श्री संघ की आग्रहभरी विनंती को स्वीकार कर रायपुर से विहार कर ता. 3 दिसम्बर को धमतरी पधारे, जहाँ उनके मंगल प्रवेश पर श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। वहाँ उनकी निश्रा में ता. 5 दिसम्बर को जिन मंदिर की वर्षगांठ के अवसर पर ध्वजा चढाई गई। दो दिवसीय स्थिरता के पश्चात् राजनांदगांव की ओर विहार किया।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 ने बैंगलोर नगर में प्रभावशाली चातुर्मास संपन्न कर ता. 1 दिसम्बर को पालीताना की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 3 ने चौहटन से बाडमेर होते हुए पालीताना की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8 ने चेन्नई धर्मनाथ मंदिर में भव्य व अनूठा चातुर्मास संपन्न कर ता. 27 नवम्बर को पालीताना की ओर विहार किया है। वे बैंगलोर, पूना होते हुए पालीताना पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा का गांधीधाम चातुर्मास ऐतिहासिक संपन्न हुआ। वहाँ से कच्छ पंचतीर्थी की यात्रा कर पौष दशमी गांधीधाम नाकोडा नगर में करके जूनागढ़ होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 3 ने मुंबई चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 6 ने हुविनहडगली से विहार कर मुंडरगि पधार गये हैं। वहाँ से पालीताना की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ठाणा 4 ने शिमोगा से विहार कर हावेरी पधार गये हैं। वहाँ से हुबली होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने चेन्नई धोबीपेठ में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर ता. 30 नवम्बर को पालीताना की ओर विहार किया है। वे भी बैंगलोर, पूना होते हुए पालीताना पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म. ठाणा 5 ने नागौर से विहार कर बीकानेर में प्रवेश किया है। जहाँ वे उपधान माला महोत्सव में अपना सानिध्य प्रदान करेंगे। बाद में पालीताणा की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 2 उदयपुर से 14 दिसम्बर को पालीताणा की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 राजनांदगांव बिराज रहे हैं। वहाँ से पूज्य गुरुवर्या के साथ नागपुर होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 ने बैंगलोर बनरगट्टा में चातुर्मास संपन्न कर टुमकुर होते हुए पालीताना की ओर विहार किया है।

श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन

श्रमण सम्मेलन- 1 मार्च से 9 मार्च 2016

श्रावक सम्मेलन- 10 मार्च से 12 मार्च 2016

राजनांदगाँव चातुर्मास की विशिष्टता

परम पूज्य गणाधीश उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म. सा. की सुशिष्या प.पू. साध्वी श्री डॉ. नीलांजना श्रीजी म.सा., पू. श्री दीप्तिप्रज्ञा श्रीजी म.सा., पू.श्री विभांजना श्रीजी म.सा. आदि श्रमणीवृन्द का भव्य चातुर्मास प्रवेश विविध जैन संघ के श्रावक श्राविकाओं के भव्य उत्साह और गुरूभक्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ। चार्तुमासिक प्रवेश समारोह में विभिन्न वक्ताओं ने अपने भाव प्रस्तुत किये। इसमें मुख्य रूप से जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के मुख्य ट्रस्टी श्री डाकलियाजी ने पूज्य म.सा. के चरणो में अपने भावों को समर्पित किया एवं पूज्य गणाधीश उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी एवं प.पू. बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. के चरणों मे चार्तुमास की स्वीकृति हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की एवं स्वागत गीत की प्रस्तुती महिला मण्डल ने की।

सम्पूर्ण चातुर्मास में अहम् भूमिका होती है प्रवचन की। प्रवचन की इस श्रृंखला में दूसरे अंग आगम सूत्रकृतांग सूत्र पर वाचना प्रारंभ की व अमर कुमार व सुर सुन्दरी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। यह विवेचना चार माह तक निरंतर निर्मल भगीरथी की तरह बहती रही।

इसी क्रम में सामायिक का विशेष महत्व समझाते हुए साध्वी भगवंत ने एक परीक्षा आयोजित की, जिसके अंतर्गत 300 सौ के लगभग प्रतियोगियों ने भाग लिया।

तप जीवन का श्रृंगार है। तप आत्मशोधन की विशेष प्रक्रिया है। चार्तुमास में चार चांद लगाने में तप का विशेष योगदान होता है। इस चार्तुमास में भी सभी

को तप से जोड़ना था। अतः अलग अलग तप की साधनाएँ की गयी, जिसके अंतर्गत बीस विहरमान तप का आयोजन भाुरू हुआ। इसमें लगभग 63 आराधक सानंद जुड़े। इसकी पूर्णाहुति के पश्चात् चिंतामणी तप करवाया गया, जिसमें बाल, युवा, वृद्ध तीनों पीढ़ियों ने भरपूर लाभ उठाया। तप के इसी क्रम में अक्षय निधि, समवशरण तप, मोक्षतप, सिंहासन तप आदि का आयोजन म.सा. की प्रेरणा से कराया गया, जिसमें भी लगभग 200 तपस्वियों ने भाग लिया। सभी तपस्वियों के पारणे की व्यवस्था एवं भोजनशाला संचालन में विशेष रूप से लालचंद जी चोपड़ा का विशेष योगदान रहा और इस कार्य में जीवनचंद जी बैद एवं उत्तमचंद जी लुनिया का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। इन बड़ी तपस्पयाओं के अतिरिक्त लड़ी तेले व आयंबिल का क्रम भी चालू था। सभी तपस्याओं के अनुमोदनार्थ वरघोड़ा व तपाभिनंदन समारोह भी संपन्न हुआ।

108 दादा गुरूदेव इकतीसा का जाप एकासणे के साथ आसोज कृष्णा सोमवती अमावस्या के दिन सम्पन्न हुआ। इसमें भी दादाभक्त उल्लासपूर्वक जुड़े।

तपस्या की श्रृंखला में श्रावण शुक्ला प्रतिपदा को गौतम स्वामी की महिमा का वर्णन एवं खीर एकासना के महत्व को समझाया, जिससे लगभग 100 आराधको ने भाग लिया। खीर एकासना के लाभार्थी के रूप में श्री पार्श्व चिंतामणी भक्ति ग्रुप की सभी सदस्याओं ने मिलकर यह लाभ लिया।

चार्तुमासिक कार्यक्रम के अंतर्गत विशेष रूप से खरतरगच्छ गुरू वंदनावली का हृदयस्पर्शी वर्णन 5 दिन तक चला। इस वन्दनावली कार्यक्रम में साध्वी श्री नीलांजना श्रीजी म.सा. ने खरतरगच्छ के विशिष्ट आचार्यो के भव्य जीवन एवं उनसे जुडी विशेष घटनाओं का मार्मिक उद्घाटन किया। आचार्य जिनेश्वरसूरि, नवअंगी टीकाकार अभयदेवसूरि एवं प्रत्यक्षप्रभावी चारों दादा गुरूदेव का एवं उनकी शासन प्रभावना का विस्तृत विवेचन राजनांदगांव संघ को पहली बार सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

चार्तुमास कार्यक्रम के अंतर्गत संयम उपकरण वंदनावली का भी कार्यक्रम रखा गया। जो पाप कराये, हिंसा की ओर ले जाये, वह अधिकरण व जो संसार सागर से तिराये वह उपकरण। जिन उपकरणों द्वारा साधक वीतरागता के पथ पर अग्रसर होते है, ऐसे संयमी जीवन के चौदह उपकरण जो मन की मलीनता और कर्मों व कषायों की कलिमा को धोने में बुहारी का काम करते हैं, ऐसे संयमी जीवन के उपकारी उपकरणों और संयम वेश की महानता, महत्ता, त्रिलोकपूज्यता पर प्रकाश डाला पू. साध्वी भगवंत ने। समस्त उपकरणों की बोलियॉ लगायी गयी । ये बोलिया पैसों से न लगाकर तप– जप– सामायिक, स्वाध्याय, खमासमण, एकासन, मौन, नवकारवाली, संथारा आदि के द्वारा लगायी गयी। उपकरणों को प्राप्त कर घर ले जाने की तो जैसे होड़ लग गयी थी। यह कार्यक्रम भी अपने आप में अनूठा और भाव विभोर कर देने वाला था।

इस चार्तुमास का विशेष आकर्षण दादा गुरूदेव महापूजन था। जो कि राजनांदगांव के इतिहास में पहली बार सम्पन्न हुआ। इस संपूर्ण महापूजन के प्रमुख लाभार्थी थे –श्री सोनी बाई राजमलजी, ललितजी, मनीशजी भंसाली परिवार। इस महापूजन में 108 जोड़ो ने दादागुरू महापूजन का लाभ लिया। प.पू. उपाध्याय भगवंत द्वारा रचित यह महापूजन सुबह 8:30 बजे से प्रारंभ होकर लगभग 2 बजे तक चला। पूजन पश्चात् 108 दीप की महाआरती हुई। महापूजन पढ़ाने के लिए बेंगलोर से विधिकारक अश्विन भाई पधारे। अश्विन भाई के पूजन एवं भक्ति गीतों से सारे आराधक झुम उठे। महापूजन में सभी आराधकों को पूजन सामग्री लाभार्थी परिवार की ओर से समर्पित की गयी।

इस चार्तमास को ऐतिहासिक बनाने वाला कार्यक्रम '' अमावस को चांद उगायो'' नाटिका का अद्भुत मंचन साध्वी श्री की प्रेरणा से हुआ। प्रथम दादा गुरूदेव के जीवन पर आधारित यह नाटिका गुरूदेव के जन्म से लेकर संयमी जीवन तक का सजीव चित्रण करती प्रतीत हुई। गुरूदेव का जीवन जितना साधना से अभिभूत है, उतना ही चमत्कारों से परिपूर्ण। इस नाटिका के माध्यम से विभिन्न चमत्कारों का मंचन, अंधे को ऑखें देना, 64

योगिनियों को स्तंभित करना, बिजली को पात्र में कैद करना, अंबिका देवी द्वारा गुरूदेव को युगप्रधान घोषित करना, सुल्तान पुत्र का विष उतारना, अमावस को चांद उगाना आदि अनेक चमत्कारिक घटनाओं से परिपूर्ण था। नाटिका का मंचन मुंबई निवासी श्री प्रेमलताजी ललवानी के निर्देशन में श्री तिलोकचंदजी बैद, श्री अजयजी सिंगी, श्री ललित जी भंसाली, श्रीमती सरला लुनिया एवं श्रीमती जया झाबक के विशेष सहयोग से हुआ। ठीक 8:00 बजे नाटिका प्रारंभ हुई अंबिका देवी की आराधना करके गुरूदेव की माता द्वारा पुत्र प्राप्ति का जीवन्त चित्रण, पुत्र का जन्म आदि गुरूदेव के जीवन के अनेक भावभरे दृश्य वातावरण को आनंद और उल्लास से भर रहे थे, वहीं सोमकुमार के अल्पवय में दीक्षित होने के संवेदनशील दृश्य आँखों को नम कर रहे थे। श्री पार्श्वनाथ जैन बगीचे का वह प्रांगण श्रद्धालुओं से खचाखच भरा था। जब अमावस्या की काली रात में चांद उगाया गया, तब सभी की करतल ध्वनि गड़गड़ाहट से गूंज उठी। रात्रि 11:30 बजे तक चले इस नाटिका ने प्रत्येक गुरूदेव भक्त को हर्षातिरेक से झूमने पर मजबूर कर दिया।

अन्य कार्यक्रमों में पूज्य म.सा. ने महाविदेह क्षेत्र की भावयात्रा करायी गयी। इसमें पूज्य म.सा. ने श्री सीमंधर स्वामी की महिमा का भावप्रवण वर्णन किया। अनेक भजनों के माध्यम से श्री सीमंधर स्वामी की महिमा का बखान किया गया। सभी आराधक वर्ग ने इस भाव यात्रा में भरत क्षेत्र में बैठे बैठे महाविदेह क्षेत्र का अनुभव किया। अन्य कार्यक्रमों में बच्चों को संस्कार देने के लिए प्रत्येक रविवार शिविर एवं संध्या में मंदिर जी में प्रभु भक्ति का आयोजन रहा। पर्यूषण पर्व के पूर्व अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी बच्चों का विशेष योगदान रहा। एवं सभी कार्यक्रमों में सभी वर्ग के आराधकों ने उत्साह पूर्वक सहभागिता प्रदान की।

पूज्य साध्वी श्री की प्रेरणा और मार्गदर्शन से संघ में श्री पार्श्व कुशल प्रतिक्रमण मंडल की स्थापना हुई, जिसमें लगभग 140 महिलाओं ने सदस्यता स्वीकार की, जिसके प्रतिदिन 4–4 महिलाओं को उपाश्रय मे आकर के स्वयं प्रतिक्रण करने एवं उपस्थित महिलाओं को प्रतिक्रमण कराने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। इसमें 25 वर्ष से लेकर 60 वर्ष तक की सभी महिलाओं को शामिल किया गया। इस मंडल का संचालन करने के लिए श्रीमती सरोज जी गोलछा को अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से मनोनित किया गया। इसके साथ ही श्रीमती जया झाबक एवं श्रीमती अनिता चौरड़िया को इनके सहयोग के लिए विशिष्ट पद भार दिये गये।

चार्तुमासिक पूर्णता के पूर्व, पूर्व की परम्परा के अनुसार चार्तुमास परिवर्तन हेतु श्री सूरजमलजी, तिलोकचंदजी बैद परिवार, श्री संजयकुमारजी, अजय कुमारजी सिंगी परिवार एवं ललित कुमारजी, मनीष कुमारजी भंसाली परिवार के द्वारा सकल संघ के समक्ष अपनी भावांजलि को पू. म.सा. के चरणों में समर्पित किया गया। पूज्य म.सा. ने चौदस के दिन श्री सूरजमल जी तिलोकचंद जी बैद परिवार को स्थान परिवर्तन हेतु स्वीकृति प्रदान की, जिससे बैद परिवार के सभी सदस्य भाव विभोर हो उठे। बैद परिवार की ओर से श्री तिलोकचंदजी ने पू.म.सा. के चरणों में कृतज्ञता अर्पित की एवं संघ को आमंत्रण दिया। दिनांक 26.11.15 को प्रातः 8 बजे सकल संघ की उपस्थिति में गाजे–बाजे के साथ पू.म.सा. का पदार्पण लाभार्थी परिवार के साथ हीरामोती लाइन स्थित निवास स्थान में हुआ। पूज्या साध्वी श्री ने अपने वक्तव्य में फरमाया – चार्तुमांस पूर्णता के उपलक्ष्य में स्थान परिवर्तन हुआ है। अनादि काल से परिवर्तन की श्रृंखला गतिमान हैं। स्थान, भारीर, योनि, रंग–रूप, आकार–प्रकार, सबकुछ बदलता रहता है परन्तु हमारें मन में परिवर्तन नहीं आता। जब तक भाव नहीं बदलेंगे, भव बदलने की परम्परा चलती ही रहेगी। इसी क्रम में खरतरगच्छ महासम्मेलन के महाआयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी को पालीताणा चलने का आह्वान किया। डॉ. चन्द्रकुमार जैन एवं अन्य वक्तओं के रूप में श्रीमति नमिता बैद ने भी छत्तीसगढ़ी भाषा में अपने भाव व्यक्त किये। श्रीमती अल्का कोटड़िया एवं श्रीमती सीमा गोलछा ने भी स्वागत गीत प्रस्तुत किया। उपस्थित साधार्मिक बंधुओं की नवकारसी व ब्यासने की व्यवस्था लाभार्थी परिवार द्वारा की गई एंव अंत में लाभार्थी परिवार द्वारा पू.म.सा. का एवं उपस्थित सभी व्यक्तियों का आभार प्रदर्शन किया। इस सभा का सफल संचालन बैद परिवार की पुत्र वधु श्रीमती डॉली बैद ने किया।

इस चातुर्मास को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में चातुर्मास समिति के संयोजक श्री तिलोकचंदजी बैद, श्री उत्तमचंदजी लुनिया, श्री संजयजी सिंघी, अजयजी सिंघी, रितेश लोढ़ा श्री ललित–मनीष भंसाली आदि का विशेष आत्मीय सहयोग रहा।

प्रेषक –श्रीमती सरोज गोलछा, राजनांदगांव (छ.ग.)

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 115

दस उत्तर सही होने जरूरी है।

1		न		
2	न			
3				न
4				न
5			न	
6			न	
7				न
8				न
9		न		
10				न
11		न		

1. भक्तामर स्तोत्र के रचयिता।
2. नवकार का दूसरा नाम।
3. श्रावक जीवन की एक विशिष्ट आराधना।
4. द्वारिका के विनाश में कारण।
5. परमात्मा महावीर की पहली माता।
6. चार शाश्वत जिननाम।
7. जिस कुल का सर्प विष को वापस नहीं लेता।
8. पच्चक्खाण का संस्कृत रूप।
9. संथारे का पर्यायवाची।
10. किसी पर कलंक लगाना।
11. जिनके मस्तक में मणि थी।

दस उत्तर सही होने जरूरी है।

1	क			
2			क	
3				क
4	क			
5	क			
6				क
7				क
8				क
9	क			
10				क
11		क		

1. संवत्सरी दिन बोला जाने वाला सूत्र।
2. एक काल चक्र में चौबीस होते हैं।
3. तप्त शिला पर संथारा कर मोक्ष पाने वाले मुनि।
4. वृषभ को देखकर वैरागी बनने वाले।
5. इसके दस प्रकार कहे गये हैं।
6. श्रमण/श्रावक के लिये जो छह जरूरी है।
7. कालिक सूत्र से विपरीत सूत्र।
8. आदिनाथ प्रभु के प्रथम गणधर।
9. तीर्थंकर के पांच होते हैं।
10. प्रभु वीर पर तेजोलेश्या का प्रयोग करने वाला।
11. गुरू दक्षिणा में अंगुष्ठ देने वाला।

जहाज मन्दिर पहेली का उत्तर पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजे।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : श्री सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन
मुम्बई-400004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 जनवरी तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल फरवरी में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के चार तथा 50-50 रुपये के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. ग्यारह विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

श्री धनराजजी-सुनीतादेवी, उज्ज्वल, गीतांजली, प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली - 113 का सही उत्तर

1. नम्रता	2. मृदुता	3. समता
4. धीरता	5. वीरता	6. सौम्यता
7. विरागता	8. सरलता	9. निस्संगता
10. अप्रमत्तता	11. निराकुलता	12. निष्कंपता
13. निर्लोभता	14. निर्लिप्तता	15. निर्भयता
16. निस्पृहता	17. गंभीरता	18. सहिष्णुता
19. कोमलता	20. एकाग्रता	21. अप्रतिबद्धता
22. अंकिचनता	23. क्षमा	24. निरंजनता

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- हर्षित ललवाणी-तिरूपात्तुर

छह बधाई पुरस्कार - कंचन ललवानी-मुम्बई, प्रेमदेवी दुग्गड़-जयपुर, चंदा गोलछा-धमतरी, मनोहरलाल झाबक-कोटा, किरण गोगड़-दुर्ग, रक्षा भण्डारी-ब्यावर,

इनके उत्तर पत्रक सही थे- साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी-रायपुर, साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी-धमतरी, साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी-पालीताणा, नीरज जैन-उदयपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, नमिता जैन-उदयपुर, सुशीला जीरावला-जोधपुर, सरसलता जैन-दिल्ली, गुलाबबेन बाफना-बल्लारी, निर्मला संखलेचा-हैदराबाद, मनोज कुमार बाफना-नंदूरबार, मनोरीबेन बाफना-नंदूरबार, हिरेन बाफना-नंदूरबार, नेहा बाफना-नंदूरबार, सूरजदेवी मालू-रायपुर, शान्ता बैद-जोधपुर, इन्दु गोलछा-धमतरी, सरला गोलछा-लालबर्रा, कैलाश जैन-नंदूरबार, आदित्य जैन-बामनिया, बसंति तालेड़ा-रायपुर, भूमिका जैन-जगदलपुर, किरन बैदमुथा-रायपुर, ग्रीष्मा संकलेचा-रायपुर, भाग्यवंती तातेड़-नंदूरबार, मोहित बेगानी-थाना, चेतना बच्छावत-अजमेर, चित्रा झाबक-बड़ोदरा, मोहनी देवी पारख-धमतरी, मांगीलालजी बोहरा-तलोदा, शांती बाई पारख-धमतरी, चंदनमल संकलेचा-हैदराबाद, सुशीला भण्डारी-कोटा, फिणी बेन बाफना-बल्लारी, पुष्पादेवी चौपड़ा-पचपदरा, निर्मला बच्छावत-फलोदी, सीमा छाजेड़-उज्जैन, निर्मला धारीवाल-कोट्टूर, मनोहरलाल झाबख-कोटा, जयश्री कोठारी-भाईन्दर, तारा बेन कोठारी-भाईन्दर, ललिता डाकलिया-पाली, चन्द्रा कोचर-भाईन्दर, शांता चोपड़ा-रतलाम, दीपा गोलछा-टिण्डीवनम्, मदनलाल कोचर-अक्कलकुवा ।

विमोचन सम्पन्न

पू. गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा अनुवादित पुस्तक 'वैराग्य शतक' का विमोचन पण्डित प्रवर डॉ. श्री जितेन्द्र बी. शाह आदि अनेक सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य मुनिश्री ने रायपुर तत्त्वज्ञान क्लास में 'वैराग्य शतक' विवेचन किया, उसके भावार्थ का इसी में संकलन किया गया है। इसी के साथ 'खरतरगच्छ गौरव गाथा' का विमोचन भी सम्पन्न हुआ। पूज्य मुनिश्री द्वारा आलेखित इस पुस्तक का यह षष्टम् संस्करण है।

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर भीख मांगने का काम करता था। वह एक पुल के पास बने स्पीड ब्रेकर के पास सडक के एक किनारे फटी चटाई बिछाकर कटोरा रख कर भीख मांगता था।

जोर जोर से बोलता था- अंधे को दो पैसे दे दो बाबूजी! भगवान आपका भला करेगा! अंधे को रोटी दो!

मिस्टर घटाशंकर घूमते घूमते वहाँ पहुँचे। उनकी नजर इस भिखारी पर पडी। उन्होंने अपनी जेब से १० रूपये का नोट निकाला। देने ही जा रहे थे कि उन्हें शक हुआ।

उन्होंने पूछा- तुम अंधे हो!

भिखारी बोला- हाँ! बाबूजी, मैं अंधा हूँ।

-तुम्हारी आंखें तो बराबर नजर आ रही है। क्या प्रमाण है, तुम्हारे पास कि

जटाशंकर बोला- वो सामने देखो! दायीं ओर बनी पीले रंग वाली, बारह मंजिल वाली बिल्डींग आपको नजर आ रही है!

घटाशंकर बोला- हाँ! नजर आ रही है।

जटाशंकर बोला- आपको नजर आ रही है। पर मुझे नजर नहीं आ रही है। इसलिये मैं अंधा हूँ।

घटाशंकर बोला- जब नजर नहीं आ रही है, तो बता कैसे रहे हो! आंख होने पर भी अंधा होने का नाटक कर रहे हो!

हम अपने जीवन में यही कर रहे हैं। आंख होने पर भी अंधा हूँ। सब अच्छी तरह दीखता है कि यहाँ संसार में कोई मेरा नहीं है, न घर न परिवार, न दुकान न मकान! फिर भी अंधे की भांति उसे नजरअंदाज करता हूँ। स्पष्ट नजर आता है कि आज नहीं तो कल मुझे जाना है, पर ऐसे जीता हूँ, जैसे बरसों यहीं रहना है।

सम्मेलन के संबंध में सूचना

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आह्वान पर पालीताना की पावन भूमि पर खरतरगच्छ का साधु साध्वी श्रावक श्राविका सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

सकल श्री संघ से निवेदन है कि आप सभी सम्मेलन में अवश्य पधारें। ताकि गच्छ विकास आदि विषयों पर गंभीरता से गहन विचार विमर्श कर निर्णय किये जा सके।

पूज्यश्री का आग्रह है कि सम्मेलन में विचार विमर्श करने हेतु आप अपने सुझाव अवश्य भिजवावें।

अपने सुझाव इस पते पर भेजें-

पूज्य गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड
पो. पालीताना- 364270 जिला- भावनगर, गुजरात
मेल - sammelan2016@gmail.com

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, मांडवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा [illegible] जालोर से मुद्रित एवं जहाज मंदिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98240 22408